तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 13, अंक - 7-8, जून- जुलाई 2025 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

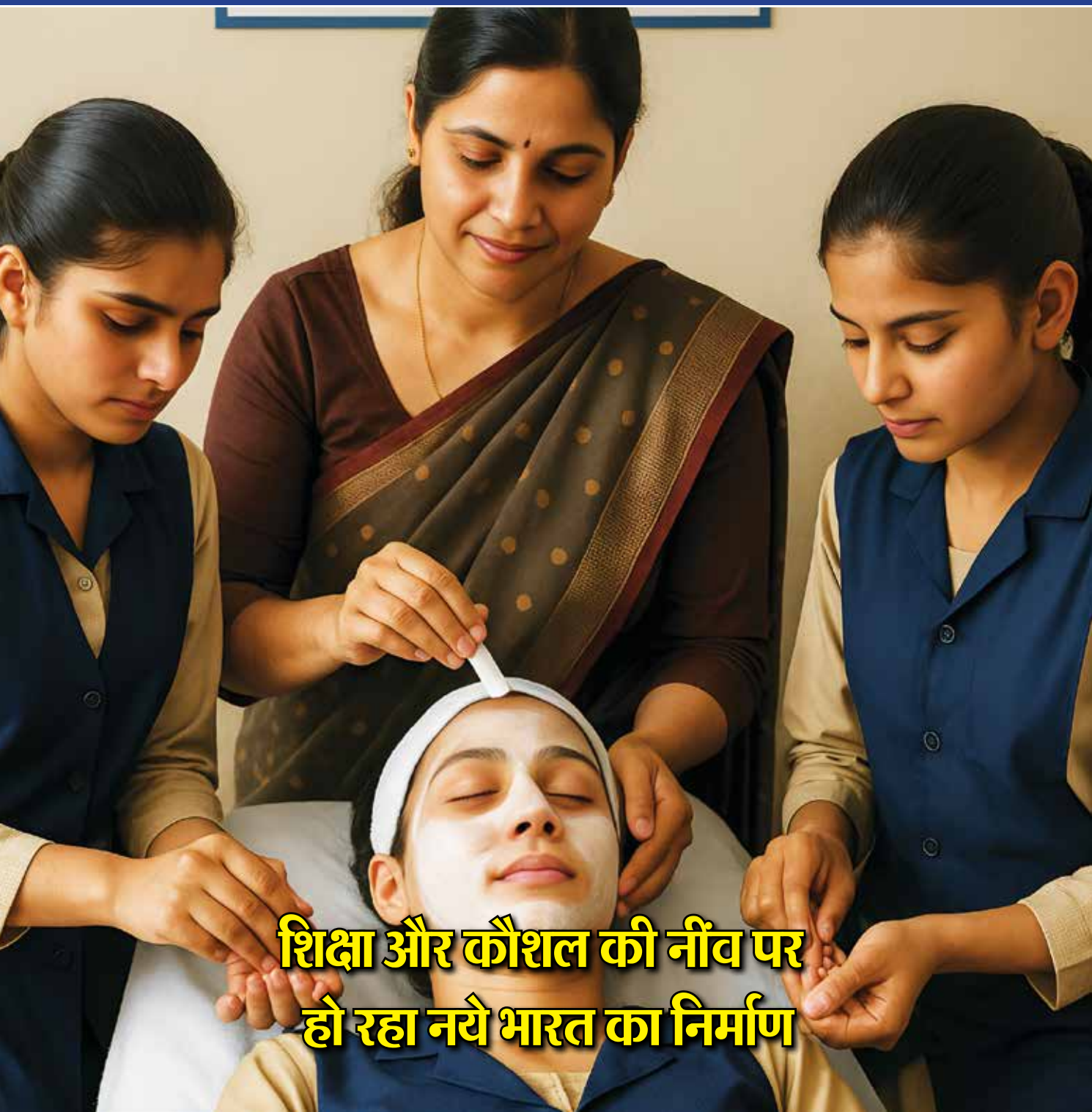

शिक्षा और कौशल की नींव पर हो रहा नये भारत का निर्माण

बचपन

कितना अबोध होता है बचपन?
कोमल-सा, निर्मल-सा,
बेरंग पावन जल-सा,
अबोध-सा, अज्ञान-सा,
बचपन होता है निष्कलुष-सा,
कितना अबोध होता है बचपन?

कितना सुंदर होता है बचपन
जैसे हो पुष्पों का उपवन,
व्योम-पुंज हो उठता कंपित
जब करता है यह क्रंदन,
कितना अबोध होता है बचपन?

बचपन में होती है कितनी मधुरता
जब सावन में वर्षा का पानी बरसता,
मन कागज़ की नाव पर सवार
कल्पित संसार को करता पार,
कितना अबोध होता है बचपन?

कैसा अद्भुत होता है बचपन?
न कपट, न उलझन,
भ्रष्ट लोगों के जग में नहीं,
प्रकृति के साथ खेलता हुआ,
कितना अबोध होता है बचपन?

नर-निर्माता के सिंहासन पर
अगर उसकी जगह मैं होता,
इस जग में बच्चों की भाँति
हर जन को अबोध बना देता,
कितना अबोध होता है बचपन?

मनोज कुमार वशिष्ठ
शिक्षक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
रेवाड़ी, हरियाणा

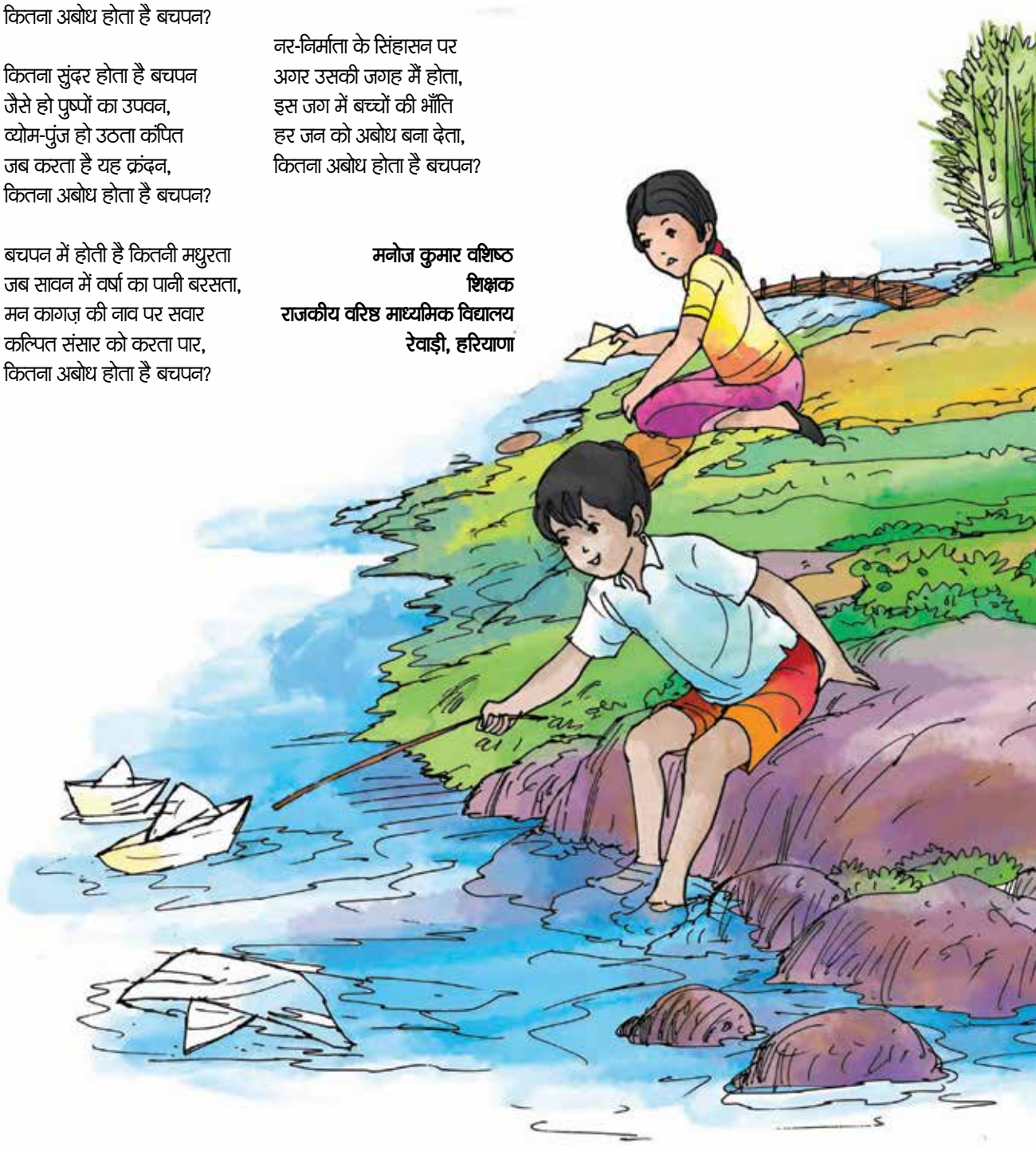

शिक्षा सारथी

जून- जुलाई 2025

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
विनीत गर्ग
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. विवेक अग्रवाल
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा
जितेंद्र कुमार
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्
ममता शर्मा
अतिरिक्त निदेशक
(मॉडल संस्कृति स्कूल)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य : 15 रुपये, **वार्षिक :** 150 रुपये

Published & Printed by Mini Ahuja on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"वीर आराम नहीं,
अभ्यास करते हैं।
एक नहीं, सौ बार
प्रयास करते हैं।"

» भविष्य को सशक्त बनाना: हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा की रूपांतरण यात्रा 5
» प्रेरणादायक पहल साबित हुआ- केबीसी 14
» सूचना प्रौद्योगिकी : रोज़गार की संभावनाएँ अपार 17
» 21वीं सदी की सफलता की चाबी: रोज़गार कौशल 18
» राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा 20
» पंचकूला का रायपुररानी विद्यालय हुनर की दिशा में कर रहा है सराहनीय कार्य 24
» 'सेवा परमो धर्मः' की राह पर खुद को तराश रहे विद्यार्थी 25
» व्यावसायिक शिक्षा में बैंकिंग विषय का महत्त्व 28
» डिजिटल तकनीक: कौशल शिक्षा में सफलता की कुंजी 29
» मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला 30
» जब मास्टर जी ने मँगाया पिज्ज़ा 31
» Adolescent Issues 32
» Education in the New Context: Delving the Role... 34
» Responsive Teaching Framework 37
» Jagannath Yatra: A Divine Journey of Devotion and Unity 39
» Sindhu Darshan Festival: Celebrating the Indus River... 42
» Amarnath Yatra: A Journey of Faith, Devotion... 45
» Guru Purnima: A Celebration of Wisdom and Guidance 46
» Kargil Vijay Diwas: A Tribute to Valor and Sacrifice 48

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

शिक्षा से स्वावलंबन की ओर

हरियाणा की शिक्षा प्रणाली ने बीते कुछ वर्षों में जो ऐतिहासिक परिवर्तन किया है, वह पूरे देश के लिए एक प्रेरणा है। पारंपरिक किताबी पढ़ाई से आगे बढ़कर अब स्कूली शिक्षा को व्यावसायिकता, उद्यमिता और रोज़गार से जोड़ा जा रहा है। राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा (NSQF) के तहत प्रदेश के 1381 स्कूलों में 15 विभिन्न व्यावसायिक सेक्टरों में 1.99 लाख से अधिक छात्र प्रशिक्षण ले रहे हैं। यह आँकड़ा सिर्फ एक शैक्षणिक प्रगति नहीं, बल्कि युवाओं को आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाने का प्रमाण है।

आज के तेज़ी से बदलते औद्योगिक परिदृश्य में, केवल सिद्धांत नहीं, बल्कि व्यावहारिक कौशल ही युवाओं को आगे बढ़ाने का माध्यम बन रहे हैं। फील्ड विज़िट, अतिथि व्याख्यान, ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग और रोजगार मेला जैसी योजनाएँ छात्रों को न केवल ज्ञान देती हैं, बल्कि उन्हें रोज़गारोन्मुखी भी बनाती हैं। श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय के साथ साझेदारी, Earn While Learn मॉडल और स्किल हब जैसी पहलों ने इस दिशा को और मज़बूती दी है।

इस अंक में प्रकाशित अनेक सफलताओं की कहानियाँ किसी छात्र का अमेज़न में चयन, किसी छात्रा का ब्यूटी एंड वेलनेस में स्वरोज़गार, या किसी ग्रामीण विद्यार्थी का खुद का छोटा स्टार्टअप यह सब दिखाते हैं कि हरियाणा की व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली केवल डिग्री नहीं, दिशा दे रही है।

आज हरियाणा का यह मॉडल एक ऐसा राष्ट्रीय उदाहरण बन रहा है, जो यह दिखाता है कि यदि नीति, योजना और समर्पण एक साथ चलें, तो शिक्षा समाज को वास्तविक रूप में सशक्त बना सकती है। हमें गर्व है कि 'शिक्षासारथी' के इस विशेषांक के माध्यम से हम इस परिवर्तन यात्रा को रेखांकित कर रहे हैं। सदा की भाँति आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

-संपादक

भविष्य को सशक्त बनाना: हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा की रूपांतरण यात्रा

डॉ. सुधीर कुमार

आज के तेज़ी से बदलते औद्योगिक दौर में, हरियाणा राज्य एक नई दिशा में अग्रसर है जहाँ स्कूली शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक ही नहीं, बल्कि व्यावसायिक, उद्देश्यपूर्ण और भविष्य-उन्मुख बन चुकी है। पिछले एक दशक में हरियाणा की स्कूली शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक शिक्षा के एकीकृत प्रयासों ने यह साबित कर दिया है कि शिक्षा सिर्फ पढ़ाई नहीं, बल्कि रोज़गार और सशक्तीकरण का माध्यम है।

1. शिक्षा जो काम आए: कक्षा से पेशे (करियर) की राह-

इस परिवर्तनकारी पहल की सोच स्पष्ट है- छात्र केवल विद्यार्थी नहीं, बल्कि भविष्य के परिवर्तनकारी नागरिक हैं। राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा (एनएसक्यूएफ) के अंतर्गत हरियाणा शिक्षा विभाग ने स्कूली स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा का एक समावेशी और माँग आधारित मॉडल अपनाया है, जो छात्रों को कक्षा से सीधे रोज़गार की दिशा में ले जाता है।

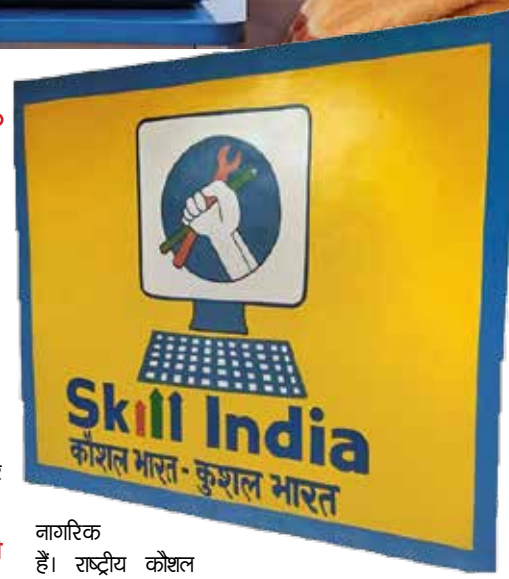

हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा (वोकेशनल एजुकेशन) की यात्रा एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में वर्ष 2012-13 में आरंभ हुई थी। यह पहल भारत-सरकार द्वारा आरंभ की गई थी, जिसमें राज्य के 40 स्कूलों को शामिल किया गया था। इन स्कूलों में प्रत्येक को दो-दो एप्लाइड स्किल्स प्रदान की गई थीं और उस समय कुल 4,840 छात्रों ने इसमें नामांकन लिया था।

यह शुरुआत आज एक व्यापक और प्रभावशाली कार्यक्रम के रूप में परिवर्तित हो चुकी है। वर्तमान में हरियाणा के 1381 स्कूलों में 15 विभिन्न व्यावसायिक सेक्टरों को कवर करते हुए कुल 1.99 लाख छात्रों का नामांकन हो चुका है। इसमें 1,03,219 छात्राएँ, 95,465 छात्र और 800 विशेष आवश्यकता वाले बच्चे नामांकित हैं, जो इसे एक समावेशी और लैंगिक रूप से समान अवसर देने

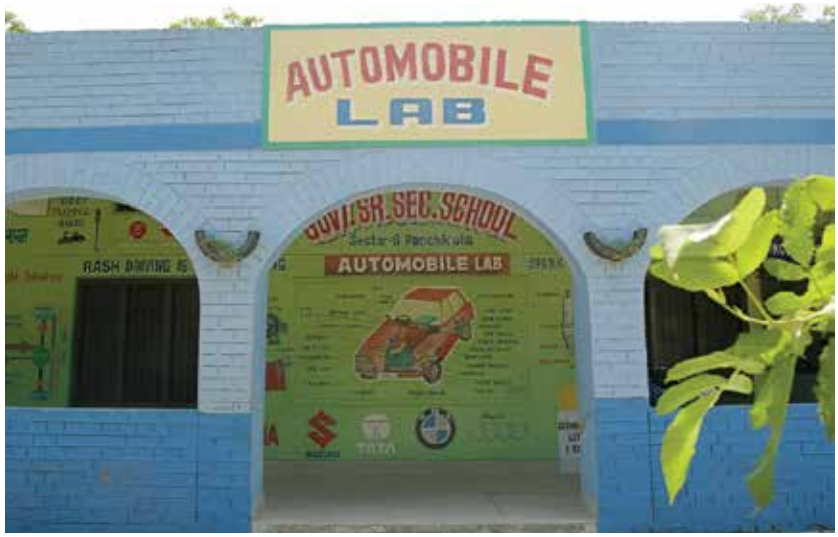

वाला कार्यक्रम बनाते हैं।

1.1 प्रगति की झलकियाँ:

- 2012-13: 40 स्कूल, दो एप्लाइड स्किल्स प्रति स्कूल, 4,840 छात्र
- 2024 तक: 1381 स्कूल, 15 सेक्टर, 1.99 लाख छात्र

1.2 इस सफलता के पीछे प्रमुख कारक:

- पाठ्यक्रम के अनुसार नियोजित व्यावसायिक विषय
- उद्योगों के साथ समन्वय
- स्किल डेवेलपमेंट को बढ़ावा देने वाली सरकारी नीतियाँ
- छात्रों की बढ़ती रुचि और जागरूकता

2. कक्षा से पेशे तक: एक सहज यात्रा-

हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा का ढाँचा पूरी तरह से परिणाम-उन्मुख है। कक्षा 10 और 12 के छात्रों का प्रायोगिक मूल्यांकन श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय (एसवीएसयू) और हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के सहयोग से किया जाता है। वर्ष 2023-24 में कक्षा-10 के छात्रों का 94.55% और कक्षा-12 का 98.63% उत्तीर्ण प्रतिशत रहा। यह भी वर्णित करना चाहेंगे कि श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय भारत का पहला एवं विश्व का छठा कौशल विश्वविद्यालय है, जो कि हरियाणा प्रदेश के पलवल जिले में दुधौला में स्थापित है।

शैक्षणिक सत्र 2023-24 में 1,424 छात्र उच्च शिक्षा के लिए पॉलिटैक्निक और बी-वॉक (बैचलर इन वोकेशनल) पाठ्यक्रमों में दाखिला ले चुके हैं। एसवीएसयू के 'अर्न व्हाइल लर्न' मॉडल के तहत छात्र 9,000 से 11,000 प्रतिमाह तक की आमदनी कर रहे हैं।

2.1 व्यावसायिक शिक्षा में फील्ड विज़िट्स का प्रभाव

आज के दौर में जहाँ सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, वहीं हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा (वोकेशनल एजुकेशन) कार्यक्रम छात्रों को अर्थपूर्ण और व्यावहारिक शिक्षण अनुभव प्रदान कर रहा है। इस पहल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है- औद्योगिक शैक्षणिक भ्रमण (इंडस्ट्रियल फील्ड विज़िट), जिन्हें पाठ्यक्रम और पाठ योजना के अनुसार व्यावसायिक शिक्षकों द्वारा योजनाबद्ध तरीके से आयोजित किया जाता है। ये फील्ड विज़िट्स कक्षा में पढ़ाई गई जानकारी और वास्तविक दुनिया के अनुभवों के बीच सेतु का कार्य करती हैं।

सिद्धांत को व्यवहार से जोड़ना: फील्ड विज़िट्स छात्रों को यह देखने का अवसर देती हैं कि उनकी किताबों में जो ज्ञान है, वह वास्तविक जीवन में कैसे लागू होता है। कक्षा से बाहर निकलकर कार्यस्थलों को देखकर छात्र न केवल अधिक गहराई से विषय को समझते हैं, बल्कि उन्हें यह भी अनुभव होता है कि उनका अध्ययन कितना प्रासंगिक है। ये दौरे केवल शैक्षणिक भ्रमण नहीं

हैं, बल्कि ऐसे अनुभव हैं जहाँ छात्र पेशेवरों से बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं और सीखते हैं।

उद्योग से जुड़ावः भविष्य की झलक-

विभिन्न उद्योगों से संपर्क कर छात्र सीधे व्यावसायिक वातावरण में अनुभव प्राप्त करते हैं चाहे वह कोई व्यवसायिक प्रतिष्ठान हो, अस्पताल, सामुदायिक कॉलेज या खेत। इन विज़िट्स के दौरान वे विशेषज्ञों और मेंटर्स से मिलते हैं, जो उन्हें उस क्षेत्र की चुनौतियाँ, संभावनाएँ और कार्यशैली समझाते हैं। इस प्रकार के अनुभव छात्रों को अपने करियर के चयन में स्पष्टता और आत्मविश्वास प्रदान करते हैं।

समावेशी शिक्षाः ग्रामीण प्रतिभाओं की भागीदारी-

वीई कार्यक्रम की एक विशेषता यह भी है कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में भी समान रूप से प्रभावी है। जहाँ इन क्षेत्रों में संगठित उद्योग और औपचारिक प्रशिक्षण संस्थानों की कमी होती है, वहीं परंपरागत और व्यावहारिक कौशल वाले स्थानीय कुशल और अर्धकुशल व्यक्तियों की सेवाएँ ली जाती हैं। ये स्थानीय विशेषज्ञ छात्रों को उनके अपने परिवेश में प्रशिक्षण देकर न केवल कौशल सिखाते हैं, बल्कि उन्हें प्रेरणा भी प्रदान करते हैं।

ये भ्रमण छात्रों द्वारा चुने गए व्यावसायिक क्षेत्रों के अनुसार व्यवस्थित की जाती है। किसी कारखाने की यात्रा हो या किसी गाँव के कारीगर से मुलाकात हर दौरा छात्रों में आत्मविश्वास, जिज्ञासा और कौशल विकसित करने की दिशा में एक कदम रहा है।

आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर और रोज़गारोन्मुख बनाना भी है। हरियाणा सरकार इस दिशा में ठोस कदम उठा रही है और मैं आप सभी को यह बताते हुए गर्व महसूस करता हूँ कि व्यावसायिक शिक्षा को हमारी शैक्षणिक नीति का अभिन्न हिस्सा बनाया जा रहा है। हमारा मानना है कि विद्यालय स्तर से ही छात्रों को व्यावसायिक और कौशल आधारित शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि वे जीवन के प्रारंभिक चरण से ही अपने रुचि और क्षमता के अनुसार किसी व्यवसाय या रोज़गार की दिशा में बढ़ सकें। इसके लिए हमने प्रदेश के अनेक सरकारी स्कूलों में व्यावसायिक विषयों की शुरुआत की है, जैसे कि आईटी, ऑटोमोबाइल, रिटेल, कृषि, हेल्थ केयर, ब्यूटी एंड वेलनेस आदि। ये विषय बच्चों में कार्यकुशलता, आत्मविश्वास और रोज़गार की समझ पैदा करते हैं।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के अंतर्गत, हम स्कूली शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण के बीच एक मज़बूत पुल बना रहे हैं। इन प्रयासों से न केवल बेरोज़गारी में कमी आएगी, बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था भी सशक्त होगी।

हमारा उद्देश्य यह है कि हर छात्र को स्नातक बनने से पहले ही किसी न किसी प्रकार का हुनर आ जाए, जिससे वह नौकरी पाने या अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करने में सक्षम हो। यह शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं होगी, बल्कि कार्यानुभव, इंटर्नशिप और प्रैक्टिकल ट्रेनिंग पर आधारित होगी। आइए, हम सब मिलकर इस नई सोच को अपनाएँ, जिससे हमारा हरियाणा एक कौशलयुक्त, आत्मनिर्भर और समृद्ध राज्य के रूप में उभरे।

-महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा सरकार

2.2 पाठ्यपुस्तकों से परेः व्यावसायिक शिक्षा को समृद्ध करते अतिथि व्याख्यान (गैस्ट लैक्चर्स)

आज के प्रतिस्पर्धी दौर में केवल पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षा पर्याप्त नहीं है। छात्रों को वास्तविक जीवन के कार्यस्थलों, बाज़ार की नवीनतम प्रवृत्तियों और उद्योग जगत की ज़मीनी हकीकत से जोड़ना भी उतना ही आवश्यक है। हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए स्कूलों में अतिथि व्याख्यान (गैस्ट लैक्चर्स) की एक सशक्त परंपरा विकसित की जा रही है।

इन अतिथि व्याख्यानों की योजना व्यावसायिक शिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रम और पाठ योजनाओं के अनुसार की जाती है, ताकि छात्रों को उद्योग जगत की ताज़ा जानकारी के साथ-साथ पाठ्यक्रम की समग्र समझ भी प्राप्त हो। इन सत्रों में छात्रों को वर्तमान व्यवसायिक परिस्थितियों, बाज़ार की मांग, और उद्योग की कार्यप्रणाली की स्पष्ट जानकारी मिलती है। अतिथि वक्ता आमतौर पर सफल उद्यमी, अनुभवी पेशेवर, ग्रामीण कारीगर, या किसी विशेष क्षेत्र के कुशल/अर्धकुशल विशेषज्ञ होते हैं। उनके जीवन के अनुभव, संघर्ष की कहानियाँ और सफलता की यात्रा छात्रों को न केवल जानकारी देती हैं, बल्कि उन्हें प्रेरित भी करती हैं। छात्रों को यह समझने का अवसर मिलता है कि जो वे कक्षा में पढ़ रहे हैं, उसका वास्तविक जीवन में क्या महत्व है।

इन सत्रों में छात्रों को सीधे प्रश्न पूछने और अपनी जिज्ञासाओं को स्पष्ट करने का अवसर भी मिलता है। जब वे किसी विषय पर एक विशेषज्ञ से सुनते हैं, तो उनकी समझ गहरी होती है और विषय से जुड़ी जटिलताओं को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं। यह संवाद छात्रों के आत्मविश्वास को भी मज़बूत करता है।

गौर करने वाली बात यह है कि इन अतिथि व्याख्यानों में केवल संगठित उद्योगों से ही नहीं, बल्कि असंगठित क्षेत्रों, ग्रामीण क्षेत्रों के शिल्पकारों, और

आज मैं अपने पैरों पर खड़ी हूँ

मेरा नाम हेमलता है। मैंने सेक्टर 15, पंचकूला के विद्यालय से स्किल हब पहल के तहत 'ब्यूटी एवं वेलनेस' का कोर्स सत्र 2021-22 में किया। मैं दो बच्चों की माँ हूँ। बच्चों का लालन-पालन करते हुए मैं अपने पैरों पर खड़ा होकर परिवार को आर्थिक सहारा देना चाहती थी। लेकिन समय कैसे निकालूँ, किस समय जाना होगा -इन्हीं बातों को सोच रही थी।

तभी मुझे जानकारी मिली कि पास के राजकीय विद्यालय में स्किल हब पहल के अंतर्गत स्कूल समय के बाद ऐसे लोगों को कोर्स करवाया जाता है, जो किसी कारणवश पूर्व में स्कूली शिक्षा या प्रशिक्षण नहीं प्राप्त कर पाए थे और अब किसी पेशे से जुड़ना चाहते हैं। सबसे बड़ी बात यह थी कि यह कोर्स सरकार द्वारा पूर्णतः निःशुल्क है। प्रवेश से लेकर प्रशिक्षण के अंत तक किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता।

इस पहल के अंतर्गत मैंने 'ब्यूटी एवं वेलनेस' क्षेत्र से जुड़ा कार्य व्यवस्थित रूप से सीख लिया। प्रैक्टिकल कार्य के लिए आधुनिक लैब की पूरी व्यवस्था थी। वह लैब तो वास्तव में किसी सैलून जैसी ही लगती थी। प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद मैंने अपने निवास पर ही सैलून शुरू किया। आज मैं प्रतिमाह 20 से 25 हज़ार रुपये तक की कमाई कर लेती हूँ। घर पर काम करने के साथ-साथ विवाह-शादियों के अवसर पर दुल्हन सजाने के ऑर्डर भी मिलते हैं, जिनसे अतिरिक्त आमदनी हो जाती है।

इस यात्रा में मेरी अध्यापिका रुचि मैडम का विशेष योगदान रहा। उन्होंने न केवल मुझे सैलून प्रबंधन सिखाया बल्कि फ्रीलांसिंग कार्य में भी आत्मनिर्भर बनाया। मैं हरियाणा सरकार की इस सराहनीय स्किल हब पहल की अत्यंत आभारी हूँ, जिसकी बदौलत आज मैं आत्मनिर्भर बन पाई हूँ।

हेमलता
छात्रा, स्किल हब पहल
पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर 15, पंचकूला

पारंपरिक हुनर वाले व्यक्तियों को भी आमंत्रित किया जाता है। इससे छात्रों को विविध अनुभवों से सीखने और अलग-अलग दृष्टिकोण समझने का अवसर मिलता है।

व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य केवल कौशल विकास नहीं, बल्कि छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करना है। अतिथि व्याख्यान न केवल छात्रों के ज्ञान को समृद्ध करते हैं, बल्कि उन्हें प्रेरणा, दिशा और उत्साह भी प्रदान करते हैं। ऐसे प्रयासों के माध्यम से हरियाणा के स्कूल छात्रों को न सिर्फ शिक्षा दे रहे हैं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और जागरूक नागरिक भी बना रहे हैं।

2.3 रोज़गार की ओर कदमः व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए जॉब फेयर की सफल पहल

हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा को केवल कक्षा तक सीमित न रखकर, छात्रों को रोज़गार से जोड़ने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। स्कूली शिक्षा में व्यावसायिक विषयों को पढ़ने वाले छात्रों की प्लेसमेंट (रोज़गार प्राप्ति) को इस योजना के प्रभाव और सफलता का महत्त्वपूर्ण मापदंड माना जाता है। वर्ष 2023-24 में कुल 35,090 छात्र कक्षा 12वीं में व्यावसायिक विषयों के साथ उत्तीर्ण हुए। इनमें से लगभग 3,215 छात्र ऐसे थे जो रोज़गार की इच्छा रखते थे और जिन्होंने 18 वर्ष की आयु पूरी कर ली थी।

इन छात्रों को उद्योग जगत से जोड़ने के लिए ज़िला स्तर पर रोज़गार मेले (जॉब फेयर्स) का आयोजन किया गया। इन जॉब फेयर का आयोजन जिला नियोजन कार्यालय (डिस्ट्रिक इंप्लाइमेंट एक्सचेंज) और स्थानीय उद्योगों/नियोक्ताओं के सहयोग से किया गया। इस पहल के अंतर्गत 3,610 छात्रों ने साक्षात्कार (इंटरव्यू) में भाग लिया, जिनमें से 728 छात्रों का चयन स्थानीय उद्योगों में रोज़गार के लिए किया गया। यह आँकड़ा न केवल योजना की सफलता को दर्शाता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि स्कूल, उद्योग और सरकारी तंत्र के समन्वित प्रयास छात्रों को आत्मनिर्भर और उद्योग-योग्य बनाने में कितने सक्षम हैं।

रोज़गार मेले छात्रों के लिए न केवल नौकरी प्राप्त करने का अवसर हैं, बल्कि वे उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाते हैं। वास्तविक दुनिया के पेशेवर माहौल से पहला परिचय इन्हीं अवसरों से होता है, जिससे छात्र अपने भविष्य की योजना और बेहतर ढंग से बना पाते हैं।

शौक से करियर तक की यात्रा

मुझे आरंभ से ही स्वयं को सँवारने और दूसरों को सुंदर बनाने का शौक रहा है। यही कारण है कि मेरा रुझान हमेशा सौंदर्य के क्षेत्र की ओर रहा। जब मैं सार्थक स्कूल में पढ़ रही थी, तब सातवीं कक्षा में पता चला कि हमारे विद्यालय में ब्यूटी एंड वैलनेस विषय भी पढ़ाया जाता है। तभी मैंने मन बना लिया था कि नौवीं कक्षा में इसे अवश्य चुनूँगी।

इस विषय को पढ़ते हुए मेरी रुचि और भी बढ़ती गई। मेरी वोकेशनल शिक्षिका अनुराधा मैडम ने मेरे कार्य को सराहा और निरंतर प्रोत्साहित किया, जिससे मेरा आत्मविश्वास और दृढ़ हुआ। एनएसक्यूएफ लैब से हमें प्रायोगिक प्रशिक्षण के लिए आवश्यक सभी सामग्री मिलती थी। इसके अतिरिक्त, विशेषज्ञों द्वारा गेस्ट लेक्चर और औद्योगिक भ्रमण ने इस क्षेत्र को और गहराई से समझने में सहायता की। 2023 में मैंने यह विषय सफलता से उत्तीर्ण किया। अब मैं स्वतंत्र रूप से इस क्षेत्र में कार्य कर रही हूँ और एक प्रतिष्ठित अकादमी से एडवांस कोर्स भी सीख रही हूँ, जिसकी फीस स्वयं वहन कर रही हूँ। मेरा आत्मबल इस अनुभव से और सुदृढ़ हुआ है।

मैं हृदय से हरियाणा में एनएसक्यूएफ के अंतर्गत संचालित व्यावसायिक शिक्षा की सराहना करती हूँ, जिसने मुझे मेरे शौक को पेशे में बदलने का अवसर दिया और आत्मनिर्भर बनने की राह दिखाई।

नेहा वर्मा, पूर्व छात्रा
सार्थक राजकीय समेकित आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सैक्टर 12 ए , पंचकूला

हरियाणा में व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में यह प्रयास एक मॉडल उदाहरण बनकर उभरा है, जहाँ शिक्षा के साथ-साथ रोज़गार को प्राथमिकता दी जा रही है। इस तरह की पहलें न केवल शिक्षा को प्रासंगिक बनाती हैं, बल्कि युवाओं को सशक्तऔर आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक सिद्ध होती हैं।

2.4 ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग से मिल रहा व्यावहारिक अनुभव

विद्यालयी शिक्षा को व्यावसायिक कौशलों से जोड़ने के उद्देश्य से समग्र शिक्षा योजना के अंतर्गत ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग (ओजेटी) को व्यावसायिक शिक्षा का एक अभिन्न अंग बनाया गया है। यह पहल कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों को वास्तविक कार्यस्थलों पर व्यावहारिक अनुभव देकर उन्हें उद्योग के अनुरूप दक्ष बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

व्यावसायिक शिक्षा में ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग की भूमिका-

ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग, छात्रों को कक्षा में सीखी गई जानकारी को वास्तविक कार्यस्थलों पर लागू करने का अवसर देती है। इससे छात्र किसी विशेष कार्य या व्यवसाय से जुड़े जटिल पहलुओं को समझते हैं और उसे प्रभावी ढंग से पूरा करने की रणनीतियाँ सीखते हैं। यह प्रशिक्षण उन्हें भविष्य में किसी भी नौकरी को बेहतर ढंग से निभाने के लिए तैयार करता है।

चूंकि व्यावसायिक शिक्षा में पढ़ाए जाने वाले विषय मुख्य रूप से व्यावहारिक होते हैं, इसलिए छात्रों को संबंधित उद्योगों में व्यावहारिक प्रशिक्षण देना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। छात्रों के जॉब रोल से संबंधित उद्योग/संस्थान, जिनकी दूरी स्कूल से कम हो, ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय कुशल एवं अर्ध-कुशल व्यक्तियों की सेवाएँ भी ली जा सकती हैं।

ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग के प्रमुख लाभ-

प्रासंगिकता: यह प्रशिक्षण सीधे उस विषय और नौकरी से जुड़ा होता है, जिससे छात्र वास्तविक अनुभव प्राप्त करते हैं।

अनुभव से सीखना: व्यावहारिक कार्य से सीखने की

बहुत ऊँची है साक्षी के हौसलों की उड़ान

पंचकूला जिले के गाँव भरेली (बरवाला) की साक्षी ने वर्ष 2020 में पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बरवाला (पंचकूला) में प्रवेश लिया। वहाँ पर उन्होंने 'हेल्थकेयर' विषय को वैकल्पिक विषय के रूप में चुना। प्रारंभ से ही उन्हें इस विषय में गहरी रुचि थी, जो समय के साथ उनके जुनून में परिवर्तित हो गई। अध्ययन के दौरान साक्षी ने हेल्थकेयर इनक्यूबेशन सेंटर, सेक्टर 7, पंचकूला में 12 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके उपरान्त उन्होंने पीएचसी, बरवाला में स्वैच्छिक इंटर्नशिप की। उनके अनुसार, इन दोनों अनुभवों ने उन्हें स्वास्थ्य क्षेत्र की तरफ और अधिक प्रेरित किया तथा उनके करियर की दिशा निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

साक्षी अपने बैच की सबसे मेधावी छात्राओं में से एक थीं। बारहवीं कक्षा सफलतापूर्वक पूर्ण करने के बाद उन्होंने पं. भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, रोहतक में बैचलर ऑफ फिज़ियोथेरेपी में प्रवेश लिया। हाल ही में जब उनका परिणाम आया, तो उन्होंने पूरे विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय, परिवार और शिक्षकों का गौरव बढ़ाया।

सबसे भावुक क्षण वह था, जब साक्षी ने परिणाम के दिन सबसे पहले मुझे कॉल कर यह शुभ समाचार साझा किया। उन्होंने अपनी सफलता का सम्पूर्ण श्रेय हेल्थकेयर विषय तथा मुझे दिया। मैं स्वयं को एक गौरवान्वित शिक्षिका अनुभव कर रही हूँ। मैं साक्षी को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए ढेरों शुभकामनाएँ देती हूँ।

शिवानी, हेल्थकेयर शिक्षिका
पीएमश्री राकवमा विद्यालय, बरवाला, पंचकूला

प्रक्रिया लंबे समय तक याद रहती है।

नई परियोजनाओं में अनुकूलनः छात्र नई जिम्मेदारियों को बेहतर तरीके से अपनाते हैं।

व्यापक दृष्टिकोणः विभिन्न कार्यों से जुड़े कर्मचारियों के कार्यों की समझ और उनके प्रति सम्मान विकसित होता है।

प्रशिक्षण की समय-सारणी इस प्रकार तय की गई है कि छात्र प्रतिवर्ष 20 घंटे का प्रशिक्षण लें, जिससे वे उच्च माध्यमिक स्तर पर कुल 80 घंटे ओजेटी (लेवल-1 से लेवल-4/ कक्षा नौवीं से बारहवीं) पूरे कर सकें। स्कूलों के प्राचार्य, व्यावसायिक शिक्षक, और जिला परियोजना समन्वयक सभी मिलकर ओजेटी के सुचारु आयोजन के लिए उत्तरदायी हैं। शैक्षणिक सत्र 2024-25 में कुल 62,078 छात्रों ने सफलतापूर्वक ऑन-द-जॉब ट्रेनिंग पूरी की है, जो इस कार्यक्रम की सफलता और प्रभावशीलता को दर्शाता है।

ओजेटी सिर्फ प्रशिक्षण नहीं, बल्कि एक बदलाव है। ऐसा बदलाव जो विद्यार्थियों को न केवल बेहतर विद्यार्थी बनाता है, बल्कि एक कुशल नागरिक भी बनाता है। समग्र शिक्षा योजना के अंतर्गत यह प्रयास विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने, देश के कौशल विकास में योगदान देने और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने की दिशा में एक सार्थक कदम है।

2.5 व्यावसायिक शिक्षा की मूल्यांकन रूपरेखाः

आज के बदलते शैक्षणिक परिदृश्य में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि छात्रों को व्यवहारिक रूप से सक्षम बनाना भी है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक शिक्षा का पाठ्यक्रम और मूल्यांकन पैटर्न इस प्रकार तैयार किया गया है, जिससे छात्र न केवल सिद्धांत बल्कि व्यावहारिक और जीवनोपयोगी कौशलों में भी दक्ष हो सकें। आगे व्यावसायिक शिक्षा के मूल्यांकन ढाँचे की विस्तृत जानकारी दी गई है-

भाग-1: सिद्धांत आधारित मूल्यांकन (30 अंक)

यह खंड दो प्रमुख तत्वों को शामिल करता हैः

व्यावसायिक कौशल (20 अंक): छात्रों को उनके चुने हुए क्षेत्र की तकनीकी जानकारी दी जाती है।

खुशबू बनी आत्मनिर्भर युवा डिज़ाइनर

मेरा नाम खुशबू है। मैंने राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर-22, फरीदाबाद से 'अपैरल स्किल' विषय में लेवल-4 के साथ बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण की है। मेरे पिताजी एक फैक्ट्री में कार्यरत हैं और मैं एक निम्नवर्गीय परिवार से संबंध रखती हूँ। प्रारम्भ से ही मुझे सिलाई-कढ़ाई और परिधानों की डिज़ाइनिंग में रुचि रही है। जब मैंने यह कौशल-आधारित कोर्स स्कूल में पूरा किया, तब मेरे मन में विचार आया कि क्यों न मैं घर पर ही एक छोटा-सा बुटीक शुरू करूँ।

मैंने अपने इस विचार को अपनी अपैरल स्किल की शिक्षिका के साथ साझा किया। उन्होंने मेरा भरपूर मार्गदर्शन किया और आवश्यक जानकारी प्रदान की। उनके प्रोत्साहन से मैंने अपने घर पर ही एक छोटा बुटीक शुरू कर दिया। आज मैं न केवल प्रति माह लगभग 10,000 रुपये कमा रही हूँ, बल्कि घर के कामों में भी अपनी माँ का सहयोग करती हूँ। इस कार्य से मुझे आत्मविश्वास मिला है और मैं अब भविष्य में इस क्षेत्र में किसी डिज़ाइनिंग कोर्स या डिग्री के माध्यम से अपने कौशल को और उन्नत बनाना चाहती हूँ। मेरा सपना है कि मैं एक सफल फैशन डिज़ाइनर बनूँ और अपनी पहचान स्वयं के दम पर स्थापित कर सकूँ।

मेरा मानना है कि यदि स्कूल स्तर पर ही विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा और सटीक मार्गदर्शन मिल जाए, तो वे कम उम्र में ही आत्मनिर्भर बन सकते हैं। तब आर्थिक कठिनाइयाँ उनकी उच्च शिक्षा या सपनों के मार्ग में बाधा नहीं बनतीं।

खुशबू, पूर्व छात्रा
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सेक्टर-22, फरीदाबाद

रोज़गार योग्य कौशल (10 अंक): संवाद कौशल, टीम वर्क, नेतृत्व आदि जैसे कौशल सिखाए जाते हैं।

भाग-2: प्रायोगिक मूल्यांकन (50 अंक)

यह भाग छात्रों के व्यावहारिक ज्ञान और कौशलों की जाँच करता है-

- प्रायोगिक परीक्षा: 15 अंक
- लिखित परीक्षा: 10 अंक
- मौखिक परीक्षा: 10 अंक
- परियोजना कार्य:
- छात्र पोर्टफोलियो: 10 अंक
- अतिरिक्तवाइवा: 5 अंक

भाग-3: आंतरिक मूल्यांकन / निरंतर मूल्यांकन (सीसीई) (20 अंक)

यह खंड छात्रों की सतत उपस्थिति और सीखने की निरंतरता पर आधारित है:

- उपस्थिति: 5 अंक
- सैट परीक्षा: 10 अंक
- प्रोजेक्ट आधारित अधिगम: 5 अंक

3. नवाचार की ओर: शिक्षा में व्यावहारिक अनुभव

- 3.1 पूर्व व्यावसायिक शिक्षा (कक्षा 6-8):

शैक्षणिक सत्र 2024-25 में हरियाणा राज्य के 1237 सरकारी स्कूलों में कक्षा 6 से 8 तक के कुल 1,19,315 छात्रों (56761 लड़के और 62554 लड़कियाँ) को व्यावसायिक शिक्षा का प्रारंभिक परिचय दिया गया है। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य छात्रों को प्रारंभिक अवस्था में ही विभिन्न करियर विकल्पों और व्यावहारिक जीवन कौशलों से जोड़ना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कई अभिनव गतिविधियाँ करवाई गईं जो छात्रों के समग्र विकास में सहायक हैं:

कार्यशाला-सत्र/व्याख्यान:

छात्रों के लिए स्थानीय उद्योगों, शिल्पकारों व कारीगरों द्वारा कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इन सत्रों ने छात्रों को विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों की मूलभूत जानकारी दी और उनके भीतर कौशल सीखने की प्रेरणा जगाई।

इंटरर्नशिप व शैक्षिक भ्रमण:

छात्रों को स्कूल की चारदीवारी से बाहर निकाल कर उन्हें ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और पर्यटन स्थलों का भ्रमण कराया गया। साथ ही, उन्होंने स्थानीय कलाकारों, शिल्पियों तथा उच्च शिक्षण संस्थानों से सीधे संवाद स्थापित किया। इससे उनके दृष्टिकोण में व्यापकता आई और उन्होंने नई चीज़ों को करीब से समझा।

कौशल मेला:

शैक्षणिक वर्ष के अंत में, कक्षा 6 से 8 तक के सभी छात्रों ने अपने सीखे हुए कौशल को प्रदर्शित करने हेतु कौशल मेला आयोजित किया। इस मेले में छात्रों ने अपने प्रोजेक्ट्स, मॉडल्स और रचनात्मक कार्यों को स्कूल और समुदाय के समक्ष प्रस्तुत किया। यह आयोजन छात्रों में आत्मविश्वास व सार्वजनिक संवाद कौशल को प्रोत्साहित करता है।

- 3.2 कुशल बिजनेस चैलेंज: कुशल बिजनेस चैलेंज प्रतियोगिता ने कक्षा 12 के छात्रों में उद्यमिता की

स्किल ने बदली मेरे जीवन की दिशा

मेरा नाम रितिका है। मैंने अपनी स्कूली शिक्षा राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पुरानी सब्ज़ी मंडी, यमुनानगर से प्राप्त की है। नौवीं में मैंने ब्यूटी ऐंड वैलनेस के अन्तर्गत त्वचा की देखभाल, हेयर स्टाइलिंग, मेकअप और मेहंदी की विभिन्न तकनीकों को सीखा और उन्हें व्यावहारिक रूप में अपनाया। बारहवीं के बाद मैंने निजी रूप से स्नातक में प्रवेश लिया और साथ ही डीएवी कॉलेज, यमुनानगर से ब्यूटी ऐंड वैलनेस में एडवांस डिप्लोमा भी किया।

इसी दौरान मेरे जीवन में एक दुखद मोड़ आया। मेरे पिताजी की एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति पहले से ही कमज़ोर थी, परंतु इस घटना के बाद हालात और कठिन हो गए। उस समय मेरी शिक्षिका ने न केवल मुझे मानसिक संबल दिया, बल्कि मुझे एक सैलून में पूर्णकालिक कार्य भी दिलाया, जिससे मेरी आमदनी शुरू हो गई।

आज मैं एक ब्यूटी सैलून में मेकअप आर्टिस्ट के रूप में कार्यरत हूँ। इसके अतिरिक्त, मैं ग्राहकों को उनके घर जाकर मेकअप, हेयर, और स्किन-केयर सेवाएँ भी देती हूँ। इस तरह मैं प्रतिमाह लगभग 15,000 से 20,000 तक कमा रही हूँ। यह सब कुछ ब्यूटी ऐंड वैलनेस विषय की बदौलत संभव हो पाया है। इस विषय ने मुझे आत्मनिर्भर बनाया, मेरी कठिनाइयों में सहारा दिया और मेरे जीवन को एक नई दिशा दी। मैं अपनी शिक्षिका और विद्यालय की आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे हुनर के माध्यम से आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया।

रितिका, पूर्व छात्रा, ब्यूटी ऐंड वैलनेस
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पुरानी सब्ज़ी मंडी, यमुनानगर

भावना को जागृत किया है। चयनित टीमों को सीड मनी और इंडस्ट्री मेंटरशिप दी जा रही है, जिससे छात्र अपना व्यवसाय प्रारंभ करने के लिए प्रोत्साहित हो रहे हैं।

» **3.3 स्किल सब्जेक्ट का कंपल्सरी सब्जेक्ट को सेकेंडरी पास फॉर्मूला में रिप्लेस करना:** 2024-25 से स्कूली परीक्षा में व्यावसायिक विषयों को अनिवार्य विषयों (गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान) की जगह स्वीकार करना एक ऐतिहासिक कदम है, जो छात्रों को लचीलापन और समान अवसर प्रदान करेगा।

» **3.4 प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना:** हरियाणा राज्य ने युवाओं की रोज़गार क्षमता को बढ़ाने और समावेशी शिक्षा को सशक्त बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत शुरू की गई ये पहलकदमी न केवल विद्यार्थियों को व्यावहारिक कौशल प्रदान कर रही है, बल्कि विशेष आवश्यकता वाले छात्रों और स्कूल से बाहर रह गए युवाओं को भी मुख्यधारा में लाने का कार्य कर रही है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई-4.0) के अंतर्गत हरियाणा सरकार के विद्यालयों में स्किल हब्स स्थापित किए गए हैं। ये नोडल कौशल केंद्र स्कूल से बाहर रह गए युवाओं को कौशल प्रशिक्षण और रोज़गार केअवसर प्रदान कर रहे हैं। अब तक 2035 युवाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है, जिसमें ब्यूटी एंड वेलनेस, कृषि, खेल, स्वास्थ्य सेवा, पर्यटन एवं आतिथ्य, आईटी-आईटीईएस, प्रबंधन, ऑटोमोटिव और रिटेल जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया गया है।

» **3.5 डिजिटल पोर्टल:** हरियाणा ने www.nsqf-haryana.in नामक एक पोर्टल विकसित किया है, जो राज्य में व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े सभी हितधारकों की जानकारी को एक जगह संकलित करता है। इस पोर्टल पर छात्रों, व्यावसायिक शिक्षकों, प्रशिक्षण प्रदाताओं, स्कूलों के निकट स्थित उद्योगों और अतिथि व्याख्याताओं की जानकारी अद्यतन की गई है।

» **3.6 समावेशी शिक्षा:** हरियाणा ने समावेशी शिक्षा को नया आयाम देते हुए विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (चिल्ड्रन विद स्पेशल नीड) को व्यावसायिक शिक्षा में शामिल किया है। वर्तमान में 800 सीडब्ल्यूएसएन छात्र विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में नामांकित हैं। यह प्रयास दर्शाता है कि कौशल शिक्षा सभी के लिए है -चाहे उनकी शारीरिक या मानसिक स्थिति कुछ भी हो।

4. एक राष्ट्रीय मॉडल की ओर-

हरियाणा का व्यावसायिक शिक्षा मॉडल केवल एक योजना नहीं, बल्कि एक आंदोलन है। यह ऐसा प्रयास है, जिसने शिक्षा को रोज़गार, उद्यमिता और आत्मनिर्भरता से जोड़ा है। जब कोई छात्र कोई प्रोजेक्ट बनाता है, परीक्षा में सफल होता है, या व्यवसाय योजना प्रस्तुत करता है तब हरियाणा के भविष्य के साथ-साथ भारत का भी उज्ज्वल भविष्य आकार लेता है।

हरियाणा की यह पहल एक समर्पित, समावेशी और भविष्य-उन्मुख व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के निर्माण की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हैं। डिजिटल तकनीकों का उपयोग, विशेष छात्रों का समावेश, और वंचित वर्गों तक पहुँच इन तीनों के संगम से राज्य न केवल कुशल व्यक्तियों का निर्माण कर रहा है, बल्कि आत्मनिर्भर नागरिकों की एक मज़बूत पीढ़ी भी तैयार कर रहा है। हरियाणा के ये प्रयास अन्य राज्यों के लिए भी एक प्रेरणा बन सकते हैं कि कैसे शिक्षा के माध्यम से जीवन को नई दिशा दी जा सकती है।

एसोसिएट कंसलटेंट
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला

सोनू बनी हेल्थकेयर प्रोफेशनल

सोनू सुपुत्री श्री मनजीत कुमार पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बरवाला (पंचकूला) की छात्रा रही हैं। सोनू ने कक्षा 9वीं में हेल्थकेयर पेशेंट केयर असिस्टेंट का वोकेशनल कोर्स चुना और 12वीं तक उसमें लगातार मेहनत और लगन के साथ पढ़ाई की। वह एक अत्यंत साधनहीन परिवार से संबंध रखती हैं, परंतु परिस्थितियाँ कभी उनके आत्मविश्वास और हौसले के सामने दीवार न बन सकीं।

12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सोनू को पारस हॉस्पिटल, पंचकूला में जीडीए के पद पर नियुक्ति मिली, जहाँ उन्होंने 12,000 प्रतिमाह की आय से अपने आत्मनिर्भर जीवन की शुरुआत की। परंतु उनकी उड़ान यहीं नहीं थमी। शिक्षिका श्रीमती शिवानी गिल के प्रेरणादायक सहयोग से सोनू ने चंडीगढ़ में बी. वॉक इन हेल्थकेयर मैनेजमेंट में दाख़िला लिया।

कोविड काल के कठिन समय में सोनू ने ओजस हॉस्पिटल में जीडीएके रूप में सेवा दी। इसके बाद उन्होंने फोर्टिस हॉस्पिटल, मोहाली के ऑन्कोलॉजी विभाग में फ्रंट ऑफिसर के रूप में कार्य किया। अपनी डिग्री पूर्ण करने के बाद आज सोनू मेडिकल रिकॉर्ड विभाग में एचओडी की सहायक के रूप में कार्यरत है और 18,000 मासिक वेतन प्राप्त कर रही है। सोनू आज बहुत खुश हैं। वह यह मानती है कि यह सब संभव हुआ सरकार द्वारा नौवीं से बारहवीं तक निःशुल्क दिए जा रहे वोकेशनल कोर्स और एक समर्पित शिक्षक के मार्गदर्शन से।

सोनू, पूर्व छात्रा
पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बरवाला, पंचकूला

तकनीकी कौशल ने दिखाया आत्मनिर्भरता का मार्ग

मेरा नाम पूजा है। एनएसक्यूएफ के अंतर्गत आईटी/आईटीईएस विषय में मेरी यात्रा मेरे जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक रही है। जब मैंने 9वीं कक्षा में इस व्यावसायिक पाठ्यक्रम को चुना, तब मुझे अंदाज़ा नहीं था कि यह मेरे करियर की दिशा को इतनी सकारात्मक रूप से बदल देगा। स्कूल स्तर पर इस विषय को पढ़ते हुए मैंने कम्प्यूटर की मूलभूत तकनीकों, डेटा एंट्री, ऑफिस एप्लिकेशन, और संचार कौशल में दक्षता प्राप्त की। इन कौशलों का अभ्यास करते हुए मेरा आत्मविश्वास भी निरंतर बढ़ता गया।

12वीं कक्षा में आईटी/आईटीईएस विषय के साथ मैंने 81% अंक प्राप्त किए। यह सफलता मेरे लिए एक मील का पत्थर थी। पाठ्यक्रम पूरा करते ही मुझे ऐमज़ॉन, निमोठ चौक, सोहना में कार्य का अवसर मिला। वहाँ मैं आज एक सम्मानजनक पद पर कार्य कर रही हूँ और अपने परिवार को आर्थिक रूप से सहयोग दे रही हूँ।

एनएसक्यूएफ के इस व्यावसायिक पाठ्यक्रम ने मुझे न केवल तकनीकी रूप से सक्षम बनाया, बल्कि आत्मनिर्भर बनने की राह भी दिखलाई। आज मुझे अपने कार्य पर गर्व है और समाज में एक नई पहचान मिल रही है। मैं इस कार्यक्रम के लिए विद्यालय, अपनी शिक्षिका तथा सरकार की इस दूरदर्शी पहल के प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। यह कोर्स उन सभी विद्यार्थियों के लिए वरदान है, जो कम उम्र में ही कुछ कर दिखाने की तमन्ना रखते हैं। यदि लगन और सही मार्गदर्शन मिले, तो कोई भी सपना अधूरा नहीं रह सकता।

पूजा, पूर्व छात्रा, आईटी/आईटीईएस (एनएसक्यूएफ)
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खेड़ी लाला, गुरुग्राम

प्रेरणादायक पहल साबित हुआ- केबीसी

कक्षा से लेकर स्टार्टअप तकः हरियाणा में छात्र उद्यमियों को दिया जा रहा है बढ़ावा

अनु शर्मा

आज की गतिशील दुनिया में, स्कूल स्तर पर उद्यमशीलता कौशल विकसित करना आवश्यक है। यह नवाचार, आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और नेतृत्व को बढ़ावा देता है- छात्रों को आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर और भविष्य के लिए तैयार नागरिक बनने के लिए तैयार करता है। उद्यमशीलता की मानसिकता को बढ़ावा देकर, स्कूल नौकरी देने वालों की एक पीढ़ी को आकार दे सकते हैं, जो वास्तविक दुनिया की चुनौतियों से निपटने के लिए सुसज्जित हैं।

21वीं सदी में शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना या नौकरी पाना नहीं रह गया है। आज आवश्यकता है ऐसे युवाओं की, जो समाज की समस्याओं को पहचान सकें और कुछ नवाचार द्वारा समाधान खोज कर उसे अवसर में परिवर्तित कर आत्मनिर्भर बन सकें। ऐसे में हरियाणा सरकार का कुशल बिजनेस चैलेंज (केबीसी) 2024-25 में युवाओं के लिए एक प्रेरणादायक पहल साबित हुआ है। यह कार्यक्रम कक्षा-12 के व्यावसायिक विद्यार्थियों को रोजगार की खोज से आगे बढ़कर रोज़गार सृजनकर्ता बनने की प्रेरणा देता है। यह पहल शिक्षा और उद्यमिता को एक साथ जोड़ते हुए विद्यार्थियों को शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ उन्हें वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने का अवसर देती है। कुशल बिजनेस चैलेंज का उद्देश्य विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना और उन्हें यह सिखाना है कि किसी भी विचार को कैसे वास्तविक व्यवसाय में परिवर्तित किया जा सकता है। इस पहल के माध्यम से विद्यार्थी न केवल अपने विचारों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ते हैं, बल्कि वे टीमवर्क, नेतृत्व और नवाचार आदि किसी भी प्रकार के जोखिम लेने और अन्य महत्त्वपूर्ण कौशल भी सीखते हैं।

उद्देश्य और दृष्टिकोणः एक समग्र दृष्टिकोण-

केबीसी का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में उद्यमिता की भावना को जागृत करना और उन्हें सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक ज्ञान का मिश्रण देने के लिए एक मंच प्रदान करना है। इस पहल का उद्देश्य है कि विद्यार्थी केवल नौकरी पाने के बजाय खुद का कोई रोज़गार सृजन करने के बारे में सोचें। इस कार्यक्रम का एक अन्य उद्देश्य यह भी है कि विद्यार्थियों को 21वीं सदी के विभिन्न कौशलों, जैसे कि नवाचार करने, सहयोगिता, नेतृत्व, निर्णय लेने और समस्या-समाधान की प्रक्रिया से जोड़ा जाए। यह न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को निखारता है, बल्कि उन्हें व्यावसायिक दृष्टिकोण से सोचने और उनकी उद्यमिता की यात्रा को शुरू करने में उनकी हर संभव मदद करता है। इसके माध्यम से उन्हें एक व्यावहारिक और उपयोगी कौशल सेट मिलता है, जो उन्हें किसी भी कार्यक्षेत्र में सफल बनने में मदद करेगा।

केबीसी ने यह तो साबित कर दिया है कि यदि विद्यार्थियों को सही दिशा, मार्गदर्शन और संसाधन मिले तो वे केवल नौकरी प्राप्त करने के बजाय रोजगार सृजन के क्षेत्र में भी सफल हो सकते हैं। इस कार्यक्रम ने विद्यार्थियों को सशक्त बनाने का भी काम किया है जिससे वे भविष्य के समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम हो सकते हैं। इस कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को व्यावसायिक सोच, कौशल और एक पेशेवर दृष्टिकोण से परिचित कराया गया है। इस कार्यक्रम की संरचना इस प्रकार से तैयार की गई है कि विद्यार्थी अपनी सोच से लेकर क्रियान्वयन तक की पूरी यात्रा का अनुभव ले सकें। इस दौरान आयोजित कार्यशालाओं, सेमिनारों और विभिन्न विशेषज्ञों से विद्यार्थियों को जो मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, वह उन्हें अपने विचारों को साकार रूप देने के लिए प्रेरणा देता है।

इस भावना को बढ़ावा देने के लिए, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् द्वारा 24 अक्टूबर, 2024 को सरकारी स्कूलों के कक्षा 12वीं के व्यावसायिक छात्रों को लक्षित करते हुए कुशल व्यवसाय चुनौती (केबीसी) शुरू की गई। 1,062 स्कूलों के 25,011 छात्रों की भागीदारी के साथ, यह चुनौती स्कूल, जिला और राज्य स्तर तक पहुँची, जिससे राज्य के हर कोने में उद्यमशीलता की ऊर्जा पहुँची।

पंचकूला में जिला स्तर पर बैंकिंग और वित्त विशेषज्ञों ने व्यावसायिक शिक्षकों के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण आयोजित किया, जो एनएसक्यूएफ सेल और उद्यम फाउंडेशन द्वारा प्रदान किए गए राज्य-स्तरीय मार्गदर्शन का पूरक था। संयुक्त राज्य परियोजना समन्वयक ने व्यक्तिगत रूप से छात्रों और शिक्षकों के साथ बातचीत की, जिससे उन्हें इस तरह की पहली पहल से अपेक्षाओं को समझने में मदद मिली। सार्थक मूल्यांकन सुनिश्चित करने के लिए, छात्रों का मार्गदर्शन करने और उनके विचारों को और निखारने के लिए प्रत्येक जूरी पैनल में एक एमएसएमई प्रतिनिधि को शामिल किया गया।

गहन मार्गदर्शन और मूल्यांकन के बाद, शीर्ष 22 टीमें चंडीगढ़ के सेक्टर 26 स्थित NITTTR में आयोजित राज्य स्तरीय शिखर सम्मेलन में आगे बढ़ीं। यहाँ उन्होंने प्रसिद्ध उद्योग विशेषज्ञों से युक्त एक प्रतिष्ठित निर्णायक मंडल के समक्ष अपने व्यावसायिक विचार प्रस्तुत किए। इस पहल ने देश का ध्यान आकर्षित किया जब शिक्षा मंत्रालय द्वारा किए गए एक ट्वीट के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा इस की सराहना की गई।

प्रतिभागियों ने पुराने कपड़ों से पर्यावरण के अनुकूल बैग, मिट्टी की मूर्तियाँ, अनोखे आकार की चॉकलेट, घर की सजावट की वस्तुएँ और हर्बल स्किन-केयर उत्पादों जैसी रचनात्मक व्यावसायिक अवधारणाएँ प्रदर्शित कीं। एक बेहतरीन विचार छात्रों के एक समूह से आया, जिन्होंने पत्तियों, फूलों और मसालों का उपयोग करके चाय का मिश्रण बनाया -एक ऐसा उत्पाद जिसकी अपने नवाचार और बाज़ार क्षमता के लिए प्रशंसा की गई। अब ये छात्र इस अवधारणा को एक पूर्ण व्यवसाय में बदलने का लक्ष्य रखते हैं।

ग्रैंड फिनाले में 5 विजेता टीमों को मान्यता दी गई, जिनमें से प्रत्येक को 10,000 रुपये का पुरस्कार दिया गया, जबकि शेष 17 उपविजेता टीमों को 5,000 रुपये मिले। पुरस्कार स्कूल शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री पंकज अग्रवाल और डीपीएससीएम श्री यशपाल यादव द्वारा प्रदान किए गए, जिन्होंने भारत के उभरते हुए रोज़गार बाजार में उद्यमियों की एक पीढ़ी के निर्माण के महत्त्व पर ज़ोर दिया।

ऐसी पहल स्कूली शिक्षा का नियमित हिस्सा बननी चाहिए। शिक्षकों को वास्तविक व्यवसायों और स्थानीय बाजारों पर भी प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए ताकि वे छात्रों को बेहतर मार्गदर्शन दे सकें। कुशल बिजनेस चैलेंज एक शक्तिशाली शुरुआत का प्रतीक है एक ऐसी पहल जो युवा दिमागों को उनके उज्ज्वल विचारों को प्रभावशाली उद्यमों में बदलने के लिए प्रेरित और सशक्त बनाती रहेगी।

सामाजिक और आर्थिक प्रभावः एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण-

कुशल बिजनेस चैलेंज 2024-25 के सत्र ने न केवल विद्यार्थियों को सशक्त बनाया, अपितु सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर भी उल्लेखनीय प्रभाव डाला है। इस पहल के अंतर्गत विद्यार्थियों को न केवल व्यावसायिक कौशलों का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ, वरन उन्हें सामाजिक परिवर्तन हेतु प्रेरित भी किया गया। जिन उत्पादों एवं सेवाओं पर विद्यार्थियों ने कार्य किया, उनमें पर्यावरण-संवेदनशील तत्वों को विशेष प्राथमिकता दी गई, जैसे कि जैव अपघटनीय उत्पाद, जैविक खाद्य-सामग्री तथा प्लास्टिक रहित विकल्प। अनेक विद्यार्थियों ने अपनी परियोजनाओं को किसी सामाजिक समस्या के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया, जैसे वृद्धजन के लिए विशेष उत्पादों का निर्माण, महिलाओं की सुरक्षा हेतु नवाचारी समाधान तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों का सृजन। इस प्रकार, कुशल बिजनेस चैलेंज ने विद्यार्थियों को समाज के विविध पक्षों में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु एक सशक्त मंच प्रदान किया। साथ ही, इस अभियान के माध्यम से विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता एवं समूह कार्य जैसे जीवनोपयोगी गुणों का भी विकास हुआ। जो

विद्यार्थी पूर्व में केवल शैक्षणिक पाठ्यक्रमों तक सीमित थे, वे अब उद्यमिता के क्षेत्र में भी सक्रिय भागीदारी करने लगे हैं। कुछ विद्यार्थियों ने अपने प्रारूपों को वास्तविक व्यावसायिक स्वरूप प्रदान किया और उन्हें निवेशकों से वित्तीय सहायता भी प्राप्त हुई। उदाहरण स्वरूप, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खैरपुर की छात्रा सकीना एवं उनकी टीम ने अपनी इवेंट मैनेजमेंट कंपनी फन स्पार्क के माध्यम से 40 से अधिक कार्यक्रम आयोजित कर 40,000 से अधिक की आय अर्जित की, वहीं सार्थक विद्यालय, सेक्टर-12ए, पंचकूला की भारती एवं उनकी टीम ने अपनी जैविक चाय को विद्यालय स्तर से बढ़ाकर स्थानीय दुकानों तक पहुँचाया। इस प्रकार, कुशल बिजनेस चैलेंज ने विद्यार्थियों को न केवल नवीन व्यवसायों की स्थापना हेतु प्रेरित किया, अपितु उन्हें समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु भी सक्षम बनाया है।

सहायक परियोजना समन्वयक
जिला परियोजना कार्यालय, एसएसए, पंचकूला

कुशल बिज़नेस चैलेंज से उभरी विद्यार्थियों की प्रतिभा

पंचकूला, हरियाणा में एनएसक्यूएफ के अंतर्गत अनेक गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं, जिनमें गेस्ट लेक्चर, फील्ड विज़िट, उद्योग प्रशिक्षण (ओजेटी) तथा प्री-वोकेशनल कार्यक्रम सम्मिलित हैं। इन सभी के अतिरिक्त इस बार विद्यार्थियों के लिए एक अनूठी पहल केबीसी- कुशल बिज़नेस चैलेंज के रूप में की गई। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य था कि विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र में स्वरोज़गार आरंभ करने के लिए अपना व्यावसायिक विचार प्रस्तुत करें।

इस कार्यक्रम में बच्चों ने अत्यंत उत्साह के साथ भाग लिया और अपने नवीन व अनूठे विचारों की प्रतिकृतियाँ प्रस्तुत कीं। विद्यार्थियों ने पुराने कपड़ों से सुंदर थैले, मिट्टी की आकर्षक मूर्तियाँ, विभिन्न आकारों में चॉकलेट बनाना, घर की सजावट के लिए हस्तनिर्मित सामग्री, तथा हर्बल स्किन केयर उत्पाद जैसी अनेक नवाचारी योजनाएँ प्रस्तुत कीं।

इसी कड़ी में हमारे विद्यालय की छात्राओं ने पर्यावरण की अनुकूलता, समाज की आवश्यकता और संभावित लाभ को ध्यान में रखते हुए पत्तियों, फूलों तथा मसालों से बनी एक विशेष प्रकार की चाय का विचार प्रस्तुत किया। जब छात्राओं ने इस नवाचार की प्रतिकृति (प्रोटोटाइप) प्रस्तुत की, तो यह न केवल सराही गयी, बल्कि इसे आगे बढ़ाने योग्य विचार माना गया। अब ये छात्राएँ इसे एक व्यावसायिक अवसर के रूप में अपनाने की दिशा में कार्य कर रही हैं। केबीसी गतिविधि ने विद्यार्थियों की छुपी हुई प्रतिभा को सामने लाने में अत्यंत प्रभावी भूमिका निभाई। इस कार्यक्रम के दौरान बच्चों में विशेष उत्साह देखने को मिला। उन्होंने न केवल अपने विषय के विद्यार्थियों के साथ बल्कि विद्यालय में एनएसक्यूएफ के अन्य विषयों के विद्यार्थियों के साथ मिलकर समूह में कार्य किया, जिससे आपसी विचारों का आदान-प्रदान हुआ। इस सहभागिता से उन्हें भविष्य में स्वरोज़गार के अनेक नए विकल्पों की जानकारी मिली। कुल मिलाकर यह कुशल बिज़नेस चैलेंज कार्यक्रम विद्यार्थियों की रचनात्मकता, नवाचार क्षमता एवं उद्यमिता को उजागर करने वाला अत्यंत लाभकारी प्रयास सिद्ध हुआ। जिला स्तर एवं राज्य स्तर पर चयनित विद्यार्थियों को प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की गई, जिससे वे अपने विचारों को व्यावहारिक रूप दे सकें।

विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की राय में यह केबीसी कार्यक्रम अत्यंत सराहनीय है क्योंकि इससे प्रत्येक विद्यार्थी की व्यावसायिक सोच एवं नवाचार क्षमता को एक मंच प्राप्त होता है। अतः आवश्यकता है कि इस प्रकार की गतिविधि का आयोजन हर वर्ष नियमित रूप से किया जाए, जिससे अधिक से अधिक प्रतिभाएँ उभर कर सामने आ सकें।

अनुराधा
वोकेशनल शिक्षक, ब्यूटी ऐंड वेलनेस
सार्थक राजकीय समेकित आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर 12ए, पंचकूला

सूचना प्रौद्योगिकी : रोज़गार की संभावनाएँ अपार

सारिका

आज की दुनिया का बहुत बड़ा हिस्सा प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित है और आधुनिक जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र खोजना मुश्किल है, जिसमें पहले से ही सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग या अनुप्रयोग न हो। सूचना प्रौद्योगिकी आँकड़ों की प्राप्ति, सूचना संग्रह, सुरक्षा, परिवर्तन, आदान-प्रदान, अध्ययन, डिज़ाइन आदि कार्यों तथा इन कार्यों के निष्पादन के लिए आवश्यक कंप्यूटर हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों से संबंधित है।

सूचना प्रौद्योगिकी वर्तमान समय में वाणिज्य और व्यापार का अभिन्न अंग बन चुकी है। संचार क्रांति के फलस्वरूप अब दूरसंचार को भी सूचना प्रौद्योगिकी का एक प्रमुख घटक माना जाने लगा है और इसे सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी भी कहा जाता है। एक उद्योग के तौर पर यह एक उभरता हुआ क्षेत्र है।

वस्तुओं के उत्पादन (मैन्युफैक्चरिंग) पर आधारित परंपरागत अर्थव्यवस्था कमज़ोर पड़ती जा रही है और सूचना पर आधारित सेवा अर्थव्यवस्था (सर्विस इकॉनमी) निरंतर आगे बढ़ रही है। सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा अर्थतंत्र का आधार बन चुकी है। पिछड़े देशों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए सूचना प्रौद्योगिकी एक सम्यक् तकनीक (अप्रोप्रियेट टेक्नोलॉजी) है। गरीब जनता को सूचना-सम्पन्न बनाकर ही निर्धनता का उन्मूलन किया जा सकता है। सूचना-सम्पन्नता से सशक्तिकरण होता है। सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से सरकारी नीतियों को अधिक असरदार बनाया जा सकता है और साथ ही लोकतंत्र के सभी पहलुओं को जन-केंद्रित किया जा सकता है। सूचना के महत्त्व के साथ-साथ उसकी सुरक्षा का महत्त्व भी बढ़ता जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े कार्यों में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, विशेष रूप से सूचना सुरक्षा एवं सर्वर विशेषज्ञों की माँग में वृद्धि होगी।

सूचना प्रौद्योगिकी इन तरीकों से व्यवसायों के लिए महत्त्वपूर्ण है-

आज के डिजिटल युग में आईटी दुनिया भर में त्वरित संचार को संभव बनाता है, जिससे संगठनों और व्यक्तियों को आसानी से संवाद करने की सुविधा मिलती है। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सॉफ्टवेयर और ईमेल जैसे आईटी समाधान लोगों के संवाद और सहयोग के तरीकों को बदल चुके हैं। आईटी सिस्टम और उपकरण प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करते हैं, दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित करते हैं और वास्तविक समय डेटा उपलब्ध कराते हैं, जिससे व्यवसायों की समग्र उत्पादकता और दक्षता में वृद्धि होती है। आईटी की

सहायता से कुछ ही सेकंड में विशाल सूचनाओं तक पहुँच संभव हो जाती है। सर्च इंजन तत्काल जानकारी प्रदान करते हैं, जो व्यक्तियों और व्यवसायों को त्वरित निर्णय लेने और समस्या समाधान में मदद करते हैं। आईटी शिक्षा के क्षेत्र में भी बेहद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शैक्षणिक संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है, दूरस्थ शिक्षा की सुविधा देता है और शोध गतिविधियों को गति प्रदान करता है। आईटी कागज़ आधारित प्रक्रियाओं, मैनुअल श्रम और भौतिक बुनियादी ढाँचे से जुड़ी लागतों को कम करता है। आईटी डेटा सुरक्षा प्रदान करता है और अवांछित या अनधिकृत पहुँच को रोकता है, जिससे महत्त्वपूर्ण जानकारी सुरक्षित रहती है। ग्राहक संबंध प्रबंधन-सीआरएम प्रणाली और चैटबॉट जैसी तकनीकें त्वरित ग्राहक सेवा प्रदान करती हैं। इससे संगठनों को ग्राहकों से संवाद बनाए रखने, संतुष्टि बढ़ाने और विकास की दिशा में आगे बढ़ने में मदद मिलती है।आईटी विविध ऑनलाइन चैनलों के माध्यम से वैश्विक व्यापार को संभव बनाता है।

कौशल शिक्षिका (वीटी)
राजकीय आदर्श वमा विद्यालय, मदीना, सोनीपत

संघर्ष से सफलता तक : रामेश्वरी बेलबासे की प्रेरक कहानी

नेशनल स्किल क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क योजना ने प्रदेश के अनेक विद्यार्थियों को कौशल प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर और रोजगार योग्य बनाया है। ऐसी ही एक प्रेरक कहानी है- राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सकेतड़ी, जिला पंचकूला की पूर्व छात्रा रामेश्वरी बेलबासे की।

रामेश्वरी के माता-पिता नेपाल से रोज़गार की तलाश में पंचकूला ज़िले के गाँव सकेतड़ी आए थे। उनके पिता दिहाड़ी मज़दूरी करते थे और माता घरेलू सहायिका थी। कठिन आर्थिक हालातों में पली-बढ़ी रामेश्वरी ने बचपन से ही यह निश्चय किया था कि वह एक दिन नौकरी करके अपने परिवार की स्थिति सुधारेगी।

वर्ष 2016-17 में उसने एनएसक्यूएफ के अंतर्गत आईटी (सूचना प्रौद्योगिकी) में लेवल-4 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया। बारहवीं के बाद ही उन्होंने नौकरी शुरू कर दी। साथ ही पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई भी प्राइवेट रूप से पूरी की। एनएसक्यूएफ प्रमाण पत्र की बदौलत उन्हें Slidetech Systems में प्रेजेंटेशन डिज़ाइनर की नौकरी मिली और फिर उत्कृष्ट कार्य प्रदर्शन के कारण वह टीम लीडर बनीं।

कोविड-19 के समय में भी उन्होंने वर्क फ्रॉम होम करते हुए परिवार को आर्थिक रूप से सँभाला। आगे चलकर वे सीनियर टीम लीडर बनीं और कई युवतियों को ग्राफिक डिज़ाइनिंग का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने न केवल अपने परिवार की ज़िम्मेदारियाँ निभाईं, बल्कि अपनी शादी का खर्च भी स्वयं वहन किया। बाद में हैदराबाद जाकर उन्होंने एक एनजीओके माध्यम से श्रवण बाधित विद्यार्थियों को साइन लैंग्वेज के ज़रिए माईक्रोसॉफ्ट ऑफिस और ग्राफिक डिज़ाइनिंग सिखाई। वर्तमान में वह Omnicom Annalect नामक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सीनियर एग्जीक्यूटिव प्रेजेंटेशन स्पेशलिस्ट के पद पर कार्यरत हैं।

उनकी सफलता की गाथा इस बात का प्रमाण है कि समर्पण, मेहनत और सही दिशा से कोई भी ऊँचाई पाई जा सकती है। वह आईटी से जुड़े विद्यार्थियों के लिए तो विशेष रूप से रोल मॉडल बन गई हैं।

सुदेश रानी, हिंदी अध्यापिका
राउवि, सैक्टर-25, पंचकूला

21वीं सदी की सफलता की चाबीः रोज़गार कौशल

एक नया युग, एक नई सोच, एक नई तैयारी

अनुज कुमार पुंडीर

आज की बदलती दुनिया में सिर्फ किताबी ज्ञान ही सफलता की गारंटी नहीं है। तकनीकी योग्यता के साथ-साथ अब छात्रों में ऐसे व्यावहारिक कौशलों की आवश्यकता है जो उन्हें न केवल नौकरी पाने में, बल्कि करियर की सीढ़ियाँ चढ़ने में भी मदद करें। ऐसे ही बहुआयामी कौशलों को हम कहते हैं- रोज़गार कौशल (Employability Skills)।

रोज़गार कौशलः अब केवल पढ़ाई नहीं, मूल्यांकन का भी हिस्सा

रोज़गार कौशल को स्कूल स्तर पर सिर्फ पढ़ाया ही नहीं जा रहा, बल्कि इसे छात्रों के मूल्यांकन यानी अंकों में भी शामिल किया जा रहा है। इस पहल के अंतर्गत यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि विद्यार्थी केवल परीक्षा पास करने तक सीमित न रहें, बल्कि वे अपने व्यक्तित्व, संवाद कौशल, समय प्रबंधन, टीमवर्क और समस्या समाधान जैसे जरूरी गुणों में भी दक्ष बनें। यह बदलाव नई शिक्षानीति के उद्देश्यों के अनुरूप है, जो समग्र विकास और करियर की तैयारी पर ज़ोर देती है। यह एक सराहनीय कदम है जो छात्रों को भविष्य की नौकरियों और व्यवसायों के लिए पहले से ही तैयार करेगा, और उन्हें सिर्फ नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि नौकरी देने वाला भी बना सकता है।

नया पाठ्यक्रम, नए जमाने की तैयारी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) और स्किल इंडिया मिशन के अनुरूप अब व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में न केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है, बल्कि रोज़गार कौशल भी एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। पाठ्यक्रम का यह भाग विद्यार्थियों को पूर्णता की ओर ले जाता है।

इस पाठ्यक्रम में निम्नलिखित 5 प्रमुख कौशल शामिल हैं-

1. संचार कौशल (कम्युनिकेशन स्किल) कुशल संवाद की कला

आज हर पेशेवर क्षेत्र में संवाद का महत्त्व सर्वोपरि है। यह केवल बोलने की क्षमता नहीं, बल्कि सुनने, समझने और प्रभावशाली ढंग से विचारों को प्रस्तुत करने की कला है। छात्रों को लिखित व मौखिक संचार, प्रस्तुति कौशल (प्रेज़ेंटेशन स्किल) और समूह चर्चा (ग्रुप डिस्कशन) जैसे पहलुओं पर प्रशिक्षित किया जाता है।

2. आत्म-प्रबंधन कौशल (सेल्फ मैनेजमेंट स्किल) खुद को जानो, खुद को सँभालो

अपने लक्ष्य को पहचानना, समय का सही प्रबंधन करना और व्यक्तिगत अनुशासन बनाए रखना -ये सभी आत्म-प्रबंधन कौशल के अभिन्न हिस्से हैं। ये कौशल छात्रों को आत्मनिर्भर, संगठित और तनाव मुक्त बनाते हैं, जो आज के प्रतिस्पर्धी माहौल में अत्यंत आवश्यक है।

3. आईसीटी कौशल (आईसीटी स्किल) डिजिटल साक्षरता की ओर एक कदम-

इंफरमेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नॉलॉजी (आईसीटी) का ज्ञान आज हर क्षेत्र में अनिवार्य हो गया है। कंप्यूटर की मूल बातें, इंटरनेट का सुरक्षित उपयोग, ऑनलाइन टूल्स और डेटा हैंडलिंग जैसे विषयों पर छात्रों को प्रशिक्षित किया जाता है, ताकि वे डिजिटल युग के अनुकूल बन सकें। क्योंकि वे किसी भी स्किल को चुनें, सभी क्षेत्र में उन्हें आईसीटी उपकरणों के द्वारा कार्य को प्रबंधित करना ही होगा। औद्योगिक क्षेत्र में चयन कर्ता अब यह माँग रखने लगे हैं कि उनके द्वारा रोज़गार के लिए चुने गए उम्मीदवार आईसीटी में दक्ष हों।

4. उद्यमिता कौशल (एंटरप्रेन्यूरियल स्किल) नौकरी खोजो नहीं, खुद बनाओ

इस कौशल का उद्देश्य छात्रों में स्वरोज़गार की भावना विकसित करना है। इसमें बिज़नेस प्लानिंग, ग्राहक सेवा, जोखिम प्रबंधन और नवाचार जैसे विषयों पर ध्यान दिया जाता है। यह उन्हें आत्मविश्वास देता है कि वे अपने व्यवसाय की शुरुआत कर सकें और दूसरों को भी रोज़गार दे सकें। आजकल उद्यमिता की सोच रखने वाले युवाओं के लिए रोज़गार एवं स्वरोज़गार दोनों ही सुगम हो जाते हैं।

5. हरित कौशल (ग्रीन स्किल) हरियाली की ओर जिम्मेदारी भरा कदम

पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता अब एक सामाजिक और व्यावसायिक जिम्मेदारी बन चुकी है। हरित कौशल छात्रों को टिकाऊ संसाधनों का उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन और ऊर्जा बचत जैसे उपायों से अवगत कराते हैं, जिससे वे हरित रोज़गारों के लिए भी तैयार हो सकें।

शिक्षा में नया बदलावः अब रोज़गार और व्यावसायिक कौशल भी मुख्य धारा में

आज की शिक्षा प्रणाली में एक सकारात्मक और व्यावहारिक बदलाव देखने को मिल रहा है, जहाँ छात्रों को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखा जा रहा, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन और पेशेवर दुनिया के लिए भी तैयार किया जा रहा है। इसी क्रम में रोज़गार कौशल और व्यावसायिक कौशल को अब थ्योरी परीक्षा का हिस्सा बना दिया गया है। थ्योरी परीक्षा में कुल 30 अंक निर्धारित किए गए हैं-

- रोज़गार कौशल के 10 अंक,
- व्यावसायिक कौशल के 20 अंक,
- इसके अलावा, प्रैक्टिकल परीक्षा के लिए 50 अंक निर्धारित किए गए हैं।

इस तरह कुल 100 अंकों की परीक्षा संरचना में से 30 अंक थ्योरी के और 50 अंक प्रैक्टिकल के हैं। जो सीधे तौर पर छात्र की अंतिम मार्कशीट में जुड़ते हैं। यह बदलाव इस ओर संकेत करता है कि अब ये विषय केवल सहायक या अतिरिक्त नहीं रहे, बल्कि मुख्य धारा शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं, जो छात्रों को अधिक सक्षम, तैयार और भविष्य के लिए सशक्त बनाने में सहायक हैं।

इस पहल का उद्देश्य छात्रों को न केवल परीक्षा पास कराने में मदद करना है, बल्कि उन्हें भविष्य के लिए भी तैयार करना है -चाहे वह कोई नौकरी हो, स्वरोज़गार हो या उद्यमिता। यह शिक्षा में एक क्रांतिकारी बदलाव है जो छात्रों को सक्षम, आत्मनिर्भर और व्यावसायिक रूप से दक्ष बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

समग्र विकास की ओर एक पहल-

रोज़गार कौशल केवल एक 'सॉफ्ट स्किल' का प्रशिक्षण नहीं है, बल्कि यह एक समग्र विकास प्रक्रिया है। यह छात्रों को सोचने, समझने, और बदलती दुनिया में खुद को अनुकूल करने की शक्ति देता है।

इन कौशलों का अंतिम उद्देश्य है- एक ऐसा युवा तैयार करना, जो न केवल खुद की जीविका चला सके, बल्कि समाज और पर्यावरण के प्रति भी उत्तरदायी हो। जब तक शिक्षा जीवन से जुड़ी नहीं होगी, तब तक उसका असर अधूरा रहेगा। रोज़गार कौशल, व्यावसायिक शिक्षा को सार्थक बनाते हैं और छात्रों को जीवन के हर मोड़ पर आगे बढ़ने की ताक़त देते हैं। यह एक ऐसा निवेश है जो जीवन-भर लाभ देता है।

तो आइए, इस नए शैक्षणिक युग में हम मिलकर ऐसे कौशलों को बढ़ावा दें, जो हमारे युवाओं को न केवल नौकरी के काबिल बनाएँ, बल्कि उन्हें जिम्मेदार, रचनात्मक और सक्षम नागरिक भी बनाएँ।

जिला संयोजक
समग्र शिक्षा हरियाणा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा

मुख्यधारा की ओर एक मज़बूत पहल

डॉ. विनय स्वरूप मेहरोत्रा

भारत में व्यावसायिक शिक्षा युवाओं को रोज़गारोन्मुखी कौशल प्रदान करने और बेरोज़गारी की समस्या के समाधान में अहम भूमिका निभा सकती है। फिर भी, इसे अब भी पारंपरिक अकादमिक शिक्षा की तुलना में कमतर आँका जाता है, जिससे इसकी स्वीकार्यता और प्रभावशीलता सीमित बनी हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 इस धारणा को बदलने का प्रयास करती है। व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के साथ एकीकृत करने की सिफारिश की गई है । लोक विद्या अर्थात भारत में विकसित व्यावसायिक ज्ञान एवं कौशल को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में एकीकरण के माध्यम से छात्रों के लिए सुलभ कराया जा रहा है । इसका लक्ष्य है कि वर्ष 2025 तक कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ा जाए। यह नीति श्रम की गरिमा को बढ़ावा, प्रारंभिक स्तर पर कौशल की पहचान, और अकादमिक व व्यावसायिक शिक्षा को राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क और राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढाँचे से जोड़ने पर बल देती है। साथ ही, यह शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय मानकों से जोड़ने और सशक्त बनाने की दिशा में कार्य करने की सिफारिश करती है।

शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन पर बल-

भारत की पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में रटने और अंक आधारित मूल्यांकन को प्राथमिकता दी जाती रही है। एनईपी-2020 इस स्थिति को बदलते हुए सीखने के परिणाम आधारित शिक्षा पर बल देती है जिससे कि आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान और व्यावहारिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सके। यह नीति 10+2 की जगह 5+3+3+4 संरचना को अपनाती है, जो बच्चों के संज्ञानात्मक विकास पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा प्रणाली को चार चरणों में बाँटा गया है: आधारभूत (फाउंडेशनल), प्रारंभिक (प्रिपरेटरी), मध्य (मिडिल) और माध्यमिक (सेकेंडरी) चरण। फाउंडेशनल चरण 3 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए है, जिसमें आँगनवाड़ी और कक्षा 1-2 शामिल हैं। इसमें खेल और गतिविधियों के माध्यम से बुनियादी कौशल सिखाए जाते हैं। प्रिपरेटरी स्टेज 8 से 11 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए है (कक्षा 3-5), जहाँ विषयों की शुरुआत होती है और रचनात्मक तरीकों से पढ़ाई करवाई जाती है। छात्रों को उनके चारों ओर की दुनिया और विभिन्न व्यवसायों से परिचित कराया जाता है। मध्य-चरण 11 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए है (कक्षा 6-8), जिसमें विषयों को गहराई से समझने, कोडिंग और प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा पर ज़ोर दिया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत माध्यमिक चरण कक्षा 9 से 12 तक (उम्र 14 से 18 वर्ष) की होती है। इसे दो भागों में बाँटा गया है- पहला भाग कक्षा 9 और 10, और दूसरा भाग कक्षा 11 और 12 को शामिल करता है। यह चरण छात्रों को सीखने में अधिक गहराई और लचीलापन देने पर केंद्रित है। इस स्तर पर छात्रों को विषयों के अधिक विकल्प मिलेंगे, जिससे वे अपनी रुचियों और भविष्य की योजनाओं के अनुसार पढ़ाई को चुन और ढाल सकेंगे। अपार आईडी (ऑटोमेटेड परमानेंट अकैडेमिक अकाउंट रजिस्ट्री आइडेंटिफिकेशन) एक यूनिक शैक्षणिक पहचान संख्या है, जिसे भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत शुरू किया है। इसका उद्देश्य छात्रों की सभी शैक्षणिक उपलब्धियों और शैक्षणिक क्रेडिट को डिजिटल

रूप से एक ही जगह जमा रखना है। जब कोई छात्र किसी कोर्स या परीक्षा को सफलतापूर्वक पूरा करता है, तो उससे जुड़े शैक्षणिक क्रेडिट उसकी अपार आईडी में जुड़ जाते हैं। यह प्रणाली छात्रों को अलग-अलग संस्थानों से पढ़ाई करने, ब्रेक लेने या कोर्स बदलने की सुविधा देती है। अपार आईडी को शैक्षणिक क्रेडिट बैंक(अकैडेमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स) से जोड़ा गया है।

यह छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों को डिजिटल रूप में संग्रहीत और प्रबंधित करने में मदद करता है।

इसके जरिए छात्र विभिन्न पाठ्यक्रमों में अर्जित क्रेडिट को एकत्र कर सकते हैं और भविष्य की पढ़ाई में उपयोग कर सकते हैं।

मध्य स्तर पर नवाचारः बैगलेस डे में गतिविधियाँ और व्यावसायिक शिक्षा विषय

मध्य स्तर (कक्षा 6-8) में दो नए तरीकों से व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत की गई है- 'बैगलेस डे' और व्यावसायिक शिक्षा विषय के रूप मे। बैगलेस-डे के तहत छात्र इन 10 दिनों में स्थानीय कारीगरों और व्यवसायों के साथ इंटर्नशिप करते हैं, जिससे उन्हें वास्तविक जीवन से जुड़ा व्यावहारिक अनुभव मिलता है।

साल भर में 10 दिन बिना बस्ता लेकर स्कूल जाना एक बोझ नहीं, बल्कि सीखने का आनंददायक अनुभव बनता है।

यह पहल छात्रों को पुस्तकों से बाहर की दुनिया से जोड़ती है और उन्हें काम की प्रकृति को समझने का अवसर देती है। फिनलैंड, जापान और सिंगापुर जैसे देशों में इस तरह की प्रणाली अपनाई जा चुकी है।

एनसीईआरटी (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्) द्वारा कक्षा 6 के लिए तैयार की गई कौशल बोध गतिविधि पुस्तक स्थानीय रूप से प्रासंगिक परियोजनाओं के जरिए छात्रों को मुख्य विषयों और व्यावसायिक शिक्षा के बीच एक जुड़ाव प्रदान करती है। व्यावसायिक पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को कार्य के तीन अलग-अलग रूपों से परिचित कराता है-

1. जीव रूपों के साथ कार्य करना,
2. मशीनों और उपकरणों के साथ कार्य करना, तथा
3. मानव सेवाओं में कार्य करना।

ये श्रेणियाँ व्यापक आर्थिक क्षेत्रों (प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक) के साथ संरेखित होती हैं और ऐसे व्यवसायों को कवर करती हैं, जिनमें समान कौशल और ज्ञान की आवश्यकता होती है। इससे विद्यार्थियों को उत्पादक कार्य के लिए एक समग्र आधार प्राप्त होता है। इसमें विद्यार्थी लंबी अवधि की संरचित गतिविधियों में भाग लेते हैं, जिससे उन्हें अनुसंधान, प्रयोग, सहयोग और आत्ममूल्यांकन का अवसर मिलता है। इन परियोजनाओं का उद्देश्य केवल अंतिम उत्पाद बनाना नहीं है, बल्कि विभिन्न व्यवसायों से संबंधित प्रक्रियाओं, औज़ारों और कार्यप्रणाली को समझना भी है। उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी कपड़े सिलने की परियोजना पर कार्य कर रहे हैं, तो उनका ध्यान केवल परिधान तैयार करने पर नहीं होगा, बल्कि वे सिलाई के उपकरणों, प्रक्रियाओं के

चरणों और गुणवत्ता बनाए रखने के लिए आवश्यक सूक्ष्म विवरणों को भी समझेंगे। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे आधुनिक विषयों की भी आरंभिक पहचान कराई गई है।

माध्यमिक स्तर पर विस्तार और समावेशन-

भारत में अब स्कूलों में छात्रों को 22 विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े व्यावसायिक विषय पढ़ाए जा रहे हैं। इन विषयों को 88 अलग-अलग जॉब रोल्स के आधार पर तैयार किया गया है, ताकि छात्र पढ़ाई के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल भी सीख सकें। इनमें कृषि, ऑटोमोबाइल, बैंकिंग, हेल्थकेयर, सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन, रिटेल, सौंदर्य और वेलनेस, मीडिया और मनोरंजन, लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्र शामिल हैं। इसका उद्देश्य है कि छात्र अपनी रुचि और स्थानीय जरूरतों के हिसाब से करियर की तैयारी कर सकें। इससे न सिर्फ रोजगार के अवसर बढ़ते हैं, बल्कि स्कूल स्तर पर ही कौशल विकास की मजबूत नींव रखी जाती है। माध्यमिक स्तर (कक्षा 9-12) पर समग्र शिक्षा योजना के तहत व्यावसायिक शिक्षा को और सशक्त किया गया है। यह योजना 27,000 से अधिक विद्यालयों में लागू है, जिसमें लड़कियों, वंचित समुदायों और विशेष आवश्यकता वाले छात्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस में मुफ्त संसाधनों की उपलब्धता, अतिरिक्त शिक्षकों की नियुक्ति और आत्मरक्षा प्रशिक्षण जैसी पहलें शामिल हैं। राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढाँचे के अनुरूप अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम पंडित सुंदर लाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान द्वारा विकसित किया जा रहा है। रोजगार क्षमता कौशल पाठ्यक्रम को इसमें शामिल किया गया है, जिसमें संवाद कौशल, आत्म-प्रबंधन, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, उद्यमिता विकास और हरित कौशल जैसे आयाम शामिल हैं। इन विषयों को रोल-प्ले और समूह परियोजनाओं के माध्यम से पढ़ाया जाता है।

बदलते समय के साथ पाठ्यक्रम में नवाचार-

आज के बदलते रोजगार परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को स्थानीय नौकरी एवं बाजार की जरूरतों के अनुसार ढाला जा रहा है। 21वीं सदी में शिक्षा प्रणाली में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जिसमें 21वीं सदी के कौशलों पर ज़ोर दिया गया है। इन कौशलों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सहयोग और संचार शामिल हैं, जो छात्रों को आधुनिक दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक हैं। व्यावसायिक पाठ्यक्रम को इस तरह तैयार किया गया है कि वह इंटरैक्टिव और सक्रिय शिक्षण प्रक्रिया को बढ़ावा दे। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याओं को समझने, उनका समाधान खोजने और चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करना है। इस प्रक्रिया में छात्रों के भीतर तार्किक सोच, रचनात्मकता, सहयोग की भावना और प्रभावी संचार जैसे महत्त्वपूर्ण कौशल विकसित होते हैं। इनमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सुरक्षा, डेटा एनालिसिस, डिजिटल मार्केटिंग, 3D प्रिंटिंग, रोबोटिक्स, टेलीमेडिसिन, इंटरनेट से जुड़ी वस्तुएँ, ड्रोन तकनीक और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसे क्षेत्रों को जोड़ा गया है। स्किल इंडिया डिजिटल हब भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जिसका उद्देश्य देशभर में कौशल विकास, शिक्षा, रोजगार और उद्यमिता के अवसर बढ़ाना है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे ई-पाठशाला और दीक्षा (डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग) के माध्यम से एनसीईआरटी की पुस्तकें अब अधिक सुलभ और इंटरैक्टिव बन गई हैं। शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। निष्ठा-कौशल जैसे कार्यक्रम शिक्षकों को व्यावसायिक विषयों की प्रभावी शिक्षा के लिए तैयार करते हैं और पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान द्वारा संचालित व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम उन्हें सैद्धांतिक व व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करता है।

चुनौतियाँ और समाधान की दिशा-

इतना सब होने के बावजूद आज भी व्यावसायिक शिक्षा कई चुनौतियाँ से जूझ रही हैं- नामांकन दर कम है, क्योंकि समाज में व्यावसायिक शिक्षा को लेकर नकारात्मक धारणा बनी हुई है। कई माता-पिता और छात्र इसे मुख्यधारा शिक्षा की तुलना में द्वितीयक विकल्प मानते हैं। योग्य शिक्षकों की कमी, विशेषकर नए और उभरते क्षेत्रों में एक बड़ी बाधा है। संसाधनों और उपकरणों की कमी के अलावा उद्योग और विद्यालयों के बीच साझेदारी भी अपेक्षित स्तर तक सुदृढ़ नहीं है।

पठन-पाठन की पारंपरिक शैली को बदलकर गतिविधि आधारित, व्यावहारिक और तकनीक-संवर्धित शिक्षण अपनाने की आवश्यकता है। डिजिटल टूल्स जैसे सिमुलेशन, आभासी कौशल प्रयोगशालाएँ, ऑगमेंटेड रियलिटी, वर्चुअल रियलिटी और लर्निंग ऐप्स का प्रयोग शिक्षा को रोचक और प्रभावी बना सकता है। पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान छात्रों को ड्रोन संचालन और हरित तकनीकों पर प्रशिक्षित करने के लिए बूट कैंप और समर कैंप आयोजित कर रहा है। उद्यमिता विकास को पाठ्यक्रम में शामिल करना आवश्यक है, जिससे समस्या समाधान, नेतृत्व और अनुकूलन क्षमता जैसे जीवनोपयोगी कौशलों का विकास हो सके। प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा, मार्ग दर्शन और वास्तविक जीवन की गतिविधियाँ इस दिशा में कारगर हो सकती हैं।

शिक्षकों के प्रशिक्षण को भी और अधिक सशक्त बनाने की जरूरत है। इस में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् और जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान जैसी संस्थाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। प्रशिक्षण में उद्योग सम्बंधित जानकारी, डिजिटल उपकरणों का उपयोग और सतत विकास जैसे पहलुओं

को समाहित करना चाहिए। एनईपी-2020 बहुआयामी मूल्यांकन को प्रोत्साहित करती है। मूल्यांकन प्रणाली में भी बदलाव आवश्यक है। पारंपरिक रिपोर्ट कार्ड की बजाय समग्र प्रगति रिपोर्ट तैयार की जाए, जिसमें छात्र की रुचि, रचनात्मकता और कौशल विकास को प्रमुखता दी जा सके।

व्यावसायिक शिक्षा विकल्प नहीं, अवसर-

व्यावसायिक शिक्षा उद्योगों की जरूरतों के अनुरूप प्रशिक्षण देती है, जिससे शिक्षा और कामकाजी दुनिया के बीच बेहतर तालमेल बनता है। इसके अलावा, यह महिलाओं और वंचित वर्गों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर भी देती है। आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत व्यावसायिक शिक्षा एक अहम भूमिका निभाती है। यह शिक्षा युवाओं को व्यावहारिक और तकनीकी कौशल प्रदान करती है, जिससे वे रोज़गार पाने या स्वरोज़गार शुरू करने के लिए तैयार हो सकें। इससे न केवल बेरोज़गारी में कमी आती है, बल्कि स्थानीय उत्पादन और उद्यमिता को भी बढ़ावा मिलता है।

व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य अकादमिक शिक्षा का विकल्प बनना नहीं, बल्कि छात्रों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार अधिक विकल्प देना है। विद्यालयों को ऐसा समावेशी वातावरण निर्मित करना चाहिए, जहाँ छात्र नौकरी, उच्च शिक्षा या उद्यमिता जैसे किसी भी पथ पर आत्मविश्वास से आगे बढ़ सकें। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में लचीलापन, डिजिटल समझ और व्यावहारिक अनुभव अत्यंत आवश्यक हैं और यह सब व्यावसायिक शिक्षा प्रदान कर सकती है।

व्यावसायिक शिक्षा न केवल मान्यता प्राप्त हो, बल्कि एक प्राथमिक विकल्प बन जाए। इससे हम आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा को और अधिक प्रभावी ढंग से लागू कर सकते हैं। 2047 तक भारत का लक्ष्य दुनिया की

सबसे बड़ी आर्थिक शक्तियों में से एक के रूप में उभरना है- व्यावसायिक शिक्षा इस लक्ष्य को प्राप्त करने में रीड की हड्डी की तरह काम करेगी। सही नीतियों, प्रभावी साझेदारियों और प्रतिबद्ध शिक्षकों के सहयोग से भारत ऐसी शिक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ सकता है ।

अधिक पठन-

- National Education Policy 2020. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
- Automated Permanent Academic Account Registry - One Nation, One Student ID
- https://https://apaar.education.gov.in/
- Pandit Sunderlal Sharma Central Institute of Vocational Education
- https://www.psscive.ac.in/
- DIKSHA (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing)
- https://ciet.ncert.gov.in/initiative/diksha
- DIKSHA Haryana – State Council of Educational Research and Training
- https://scertharyana.gov.in/diksha-haryana/

प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
पाठ्यचर्या विकास एवं मूल्यांकन केंद्र
पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, एनसीईआरटी
भोपाल- 462 002, मध्यप्रदेश

पंचकूला का रायपुररानी विद्यालय

हुनर की दिशा में कर रहा है सराहनीय कार्य

सरोज देवी

आज के दौर की बात करें, तो माननीय प्रधानमंत्री जी की सोच के अनुरूप हुनर की शिक्षा को स्कूली स्तर से ही गुणवत्ता के साथ देने के प्रयास हरियाणा प्रदेश में निरंतर किए जा रहे हैं। यह सर्वविदित है कि व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में हरियाणा स्कूली स्तर पर देशभर में अग्रणी राज्य है। इसी दिशा में एक उल्लेखनीय प्रयास ज़िला पंचकूला के रायपुररानी स्थित राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय द्वारा किया जा रहा है, जहाँ विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा कई प्रकार के नवाचारों के माध्यम से प्रदान की जाती है।

इस विद्यालय के व्यवसायिक पाठ्यक्रमों से उत्तीर्ण विद्यार्थी अपने सीखे हुए हुनर के दम पर रोज़गार और स्वरोज़गार के क्षेत्र में सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं। कुछ विद्यार्थी निजी कंपनियों में कार्यरत हैं। हाल ही में आयोजित कुशल बिज़नेस चैलेंज प्रतियोगिता में इस विद्यालय के विद्यार्थियों ने ज़िला स्तर पर पहले चरण में शीर्ष पाँच में स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया।

इस प्रतियोगिता में विद्यालय की आईटी सेक्टर की टीम ने पुरानी जीन्स की पैंट पर आर्ट करके सुंदर व मज़बूत हैंडबैग बनाने का विचार प्रस्तुत किया, जो सभी को बेहद पसंद आया। यही नहीं, यह टीम हाल ही में सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म, जैसे इंस्टाग्राम आदि के माध्यम से ऑर्डर भी प्राप्त कर रही थी।

हम सब जानते हैं कि आने वाला समय हुनर का है। कोई भी व्यक्ति छोटे स्तर से शुरुआत करके भी अपने कौशल के बल पर उच्च पदों तक पहुँच सकता है। हमारे विद्यालय में सदैव यही प्रयास रहता है कि बच्चों को नई तकनीकों के माध्यम से तकनीकी शिक्षा प्रदान की जाए, जिससे वे रुचिपूर्वक सीख सकें।

विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को ऐसे शैक्षणिक भ्रमण कराए जाते हैं, जिनसे उनकी जिज्ञासा में वृद्धि हो और उन्हें करियर की दिशा में मार्गदर्शन मिल सके। ऑटोमोटिव स्किल के क्षेत्र में भी विद्यालय निरंतर नवाचार कर रहा है। हाल ही में विभाग द्वारा प्राप्त एक वाहन को 'व्हीकल ऐज लर्निंग एड' सिद्धांत के तहत पूरी तरह शैक्षणिक बनाया गया है, जिससे संबंधित विद्यालयों में इसकी व्यापक चर्चा हो रही है। यह वाहन अब स्किल एजुकेशन के प्रचार और जागरूकता का भी माध्यम बन चुका है, जिसे विद्यालय ने ऑटोमोटिव पार्क नाम दिया है।

यहाँ से हुनर की शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के पास अब वर्टिकल और हॉरिज़ॉन्टल मोबिलिटी, दोनों प्रकार के करियर विकल्प उपलब्ध होते हैं। एम्प्लॉयबिलिटी स्किल्स विषय के जुड़ने के बाद विद्यार्थियों को अपने चयनित स्किल के साथ-साथ संचार कौशल, आत्म-प्रबंधन, आईसीटी स्किल्स, उद्यमिता कौशल तथा हरित कौशल (ग्रीन स्किल्स) भी सिखाए जाते हैं।

खास बात यह है कि अब कौशल रोज़गार निगम की नियुक्तियों में भी एनएसक्यूएफ स्तर प्रमाण-पत्र धारकों को प्राथमिकता दी जा रही है, जिससे इस विद्यालय से प्रशिक्षित विद्यार्थी रोज़गार की दौड़ में एक कदम आगे रहते हैं।

प्रधानाचार्या
राआसंवमा विद्यालय, रायपुररानी, पंचकूला

'सेवा परमो धर्मः' की राह पर खुद को तराश रहे विद्यार्थी

शिवानी

हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए चलाई जा रही विभिन्न कौशलों में हेल्थकेयर कौशल आज की पीढ़ी को न केवल आत्मनिर्भर बना रहा है, बल्कि उनमें मानव सेवा और संवेदनशीलता की भावना भी जगा रहा है। इस योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को दो प्रमुख जॉब रोल- होम हेल्थ ऐड और जनरल ड्यूटी असिस्टेंट में प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। यह स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपना भविष्य बनाने वाले छात्र-छात्राओं के लिए स्कूली स्तर पर एक सुनहरे अवसर के रूप में है।

विशेष गतिविधियाँ और प्रशिक्षण

इस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों के लिए अनेक प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, जैसेः

- विशेष अतिथि व्याख्यान (गैस्ट लैक्चर्स)।
- कॉलेजों एवं अस्पतालों में शैक्षणिक भ्रमण (फील्ड विज़िट)।
- प्रख्यात अस्पतालों में ऑन-जॉब ट्रेनिंग, जैसेः ओजस हॉस्पिटल, पंचकूला, साकेत हॉस्पिटल, शौर्य हॉस्पिटल।
- विद्यार्थियों को स्कूल स्तर पर ही हेल्थकेयर लैब्स और इनक्यूबेशन सेंटर में अलग-अलग प्रक्रियाएँ सिखाई जाती हैं, जैसेः बीपी नापना, तापमान मापना

फिजियोथेरेपी की मूल बातें-

- व्यक्तिगत स्वच्छता
- प्राथमिक उपचार (फर्स्ट एड) जिसमें सीपीआर, ड्रेसिंग, साँप या कुत्ते के काटने, जलने, प्राकृतिक आपदाओं के समय प्राथमिक सहायता शामिल हैं।
- विद्यार्थी इन सभी चीज़ों को टूलकिट के माध्यम से घरों में अभ्यास करके अपने पड़ोसियों की मदद भी कर रहे हैं।

अस्पतालों में कार्य अनुभव-

- ऑन-जॉब ट्रेनिंग के दौरान छात्र-छात्राओं को विभिन्न विभागों में तैनात किया जाता हैः माइनर ओटी, इमरजेंसी, ओपीडी/ आईपीडी, मेडिकल आईसीयू, सर्जिकल आईसीयू , पीडियाट्रिक ICU, आदि।
- यहाँ विद्यार्थी बीमारों की देखभाल, मरीजों की बीपी और तापमान जाँच तथा प्राथमिक सहायता प्रदान करने में सहायता करते हैं। वे अपने साथी छात्रों को भी यह ज्ञान बाँटते हैं।

जागरूकता अभियानों का आयोजन

विद्यालयों में समय-समय पर विशेष दिवस मनाए जाते हैं, जैसेः नर्सेस डे, रेड क्रॉस डे, हैंड वाशिंग डे। साथ ही, रैलियाँ एवं अभियान आयोजित किए जाते हैं ताकि स्कूल के अन्य विद्यार्थी भी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हों।

आगे की शिक्षा और वैश्विक अवसर

- हेल्थकेयर शिक्षा प्राप्त कर चुके अधिकतर विद्यार्थी अब नर्सिंग, फार्मेसी, BMLT, DMLT, तथा B.Voc कोर्सेज जैसे किः हॉस्पिटल मैनेजमेंट, ओटी टेक्नीशियन, इमरजेंसी टेक्नीशियन, रेडियोलॉजी, सीटी / एमआरआई टेक्नीशियन में दाखिला ले रहे हैं। कुछ छात्रों ने तो विदेशों में अवसर भी प्राप्त किए हैं, जैसे कि AZUBI प्रोग्राम के अंतर्गत जर्मनी में नर्सिंग की पढ़ाई कर रहे हैं।

निष्कर्षः हेल्थकेयर शिक्षा केवल एक विषय नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है। यह विद्यार्थियों को न केवल रोज़गार के लिए तैयार करती है, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक भी बनाती है।

वीटी, हैल्थ केयर
पीएमश्री राकवमा विद्यालय, बरवाला, पंचकूला

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना,अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

» प्रश्नः भारत का राष्ट्रीय पक्षी कौन है?
» उत्तरः मोर
» प्रश्नः ताजमहल किस शहर में स्थित है?
» उत्तरः आगरा में
» प्रश्नः भारत के पहले प्रधानमंत्री कौन थे?
» उत्तरः पंडित जवाहरलाल नेहरू
» प्रश्नः सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह कौन-सा है?
» उत्तरः बृहस्पति
» प्रश्नः पृथ्वी पर कुल कितने महाद्वीप हैं?
» उत्तरः सात
» प्रश्नः भारत का राष्ट्रीय फूल कौन है?
» उत्तरः कमल
» प्रश्नः हम संविधान दिवस कब मनाते हैं?
» उत्तरः 26 नवम्बर को
» प्रश्नः दुनिया का सबसे ऊँचा पर्वत कौन-सा है?
» उत्तरः माउंट एवरेस्ट
» प्रश्नः कंप्यूटर के मस्तिष्क को क्या कहते हैं?
» उत्तरः सीपीयू
» प्रश्नः किस ग्रह को लाल ग्रह कहा जाता है?
» उत्तरः मंगल ग्रह को

पहेली बूझोः प्राणी खोजो

1. चिपककर खून पीने वाली
2. टिमटिमाने वाला कीड़ा
3. मामा के नाम से मशहूर
4. मौसी के नाम से मशहूर
5. माता का दर्जा पाने वाली
6. जिसकी नाभि में कस्तूरी
7. गांधीजी के तीन....
8. हल खींचने वाला पशु
9. सर्वाधिक समझदार पशु
10. नकल उतारने में माहिर पशु
11. चालाकी के लिए मशहूर पशु
12. चालाकी के लिए मशहूर पक्षी
13. गांधी जी जिसका दूध पीते थे
14. फूलों पर मँडराने वाली परी
15. कभी न खिलने वाली कली

1. जोंक 2. जुगनू 3. बंदर 4. बिल्ली 5. गाय 6. कस्तूरी मृग 7. बंदर 8. बैल 9. चिंपांजी 10. बंदर 11. लोमड़ी 12. कौआ 13. बकरी 14. तितली 15. छिपकली

संकलन-संयोजन :
प्रशान्त अग्रवाल
प्राथमिक विद्यालय डहिया
फतेहगंज पश्चिमी, ज़िला बरेली
उत्तर प्रदेश

बाल पहेलियाँ

1. जर्मन में 'जिन्के' सब कहते,
मैं हूँ धातु अजब।
एंड्रियास मार्ग्राफ ने खोजा है,
यह है बात ग़ज़ब।

2. चमकदार, मज़बूत, टिकाऊ,
घर-घर पाया जाऊँ।
लोहे और कार्बन से बनता,
बोलो, क्या कहलाऊँ?

3. 'एलुमेन' लैटिन में कहते,
चाँदी जैसा रंग।
इससे खिड़की, बर्तन बनते,
बोलो, राज तरंग।

4. लैटिन में 'फेरम' सब कहते,
हूँ बहुत फौलादी।
समझ-बूझ कर बोलो बच्चो,
फिर चलें चौपाटी।

5. चमकीली, बहुमूल्य धातु मैं,
श्वेत है मेरा रंग।
पायल, बिछिया, गुच्छा, कंगन,
रख लो अपने संग।

6. चमकदार, बहुमूल्य धातु मैं,
पीला-पीला रंग।
कुंदन, कंचन कहते मुझको,
बोलो, राज उमंग।

7. चमकदार, एक तरल धातु मैं,
बूझो मेरा नाम।
क्विक सिल्वर भी कहते मुझको,
धातु नहीं मैं आम।

8. लाल-लाल सा रंग है मेरा,
सदा प्रकृति में पाओ।
थाली, चम्मच, लोटा, बोतल,
बर्तन आदि बनाओ।

9. प्रथम हटे तो 'तल' बन जाता,
अंत हटे तो 'पीत'।
तीन वर्ण का नाम है मेरा,
बोलो राम सुजीत।

10. लैटिन में 'स्टैन्नम' कहते,
हूँ मैं धातु निराली।
'रांगा' भी कहते मुझको,
बोलो, नव्या लाली।

11. चाँदी जैसा रंग है मेरा,
तीन वर्ण का नाम।
मध्य हटे तो 'निल' कहलाऊँ,
धातु नहीं मैं आम।

12. 'प्लंबम' के नाम से मुझे,
सदा लोग पहचाने।
सोचो, समझो और बताओ,
गाओ खूब तराने।

उत्तरः
1-जस्ता (जिंक) 2-इस्पात(स्टील) 3- एल्युमिनियम 4- लोहा (आयरन) 5-चाँदी 6-सोना 7-पारा 8-तांबा 9-पीतल 10-टिन 11-निकिल 12-लेड

डॉ. कमलेन्द्र कुमार (प्रा.अ.)
प्राथमिक विद्यालय, डगरू का पुरवा
कुठौंद, जालौन, उत्तर प्रदेश

बीज मंत्र

गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं। चिंकी, चिंटू, मुनिया और मोनू रोज़ गाँव की अमरैया की छाँव में जुटते। पास ही दादाजी खेतों की रखवाली में लगे रहते। चिंटू सवालों को थामे अपने बाल टोली के साथ दादाजी के पास जा पहुँचा।

'दादू, पेड़ तो सभी जगह कम होते जा रहे हैं और गर्मी बढ़ती जा रही है। क्या ऐसे ही चलता रहेगा? 'चिंटू ने चिंता के स्वर में पूछा।

दादाजी बोले 'बेटा, पेड़ तो धरती के प्राण हैं। इनका कम होना मतलब हमारी साँसों का कम होना है।'

'दादाजी! इससे बचने के लिए क्या उपाय हैं?'चिंकीपूछ पड़ी।

'हम सबको पेड़ लगाकर उनकी रक्षा करनी चाहिए', दादाजी बोले।

'यह तो बड़े-बुज़ुर्गों का काम है दादाजी, हम बच्चे क्याकर सकेंगे?' मुनिया ने सहजता से पूछा।

'अरे बेटू! अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। पेड़ हम सब मिलकर लगा सकते हैं, इसमें बच्चे-बूढ़े का कोई भेद नहीं है' दादाजी ने प्रेम से समझाया।

'अरे वाह! यह तो बहुत अच्छी बात है कि हम भी वृक्षारोपण कर सकते हैं!' मोनू उत्साहित होकर बोला।

'हमें इसके लिए कुछ तैयारी करनी होगी। घर के आसपास, बाज़ार आदि स्थानों पर आसानी से मिलने वाले फलों के बीजों को एक जगह इकट्ठा करना होगा, बरसात आने पर इन्हीं बीजों को धरती में रोपना होगा, तभी तो पेड़ उगेंगे', दादाजी ने धैर्यपूर्वक समझाया।

'वो कैसे?' चिंटू पूछ बैठा।

'हमारे आसपास नीम, इमली, आम, सीताफल, शीशम, जामुन, अमरूद, सहजन, कहुआ,बबूल आदि के बीज मिल जाते हैं। इन्हें इकट्ठा करके एक 'बीज-बैंक' बनाएँगे। गोबर और मिट्टी में बीज लपेटकर गोलियाँ बनाएँगे। एक थैली में इन बीज-बम को रखेंगे।' दादाजी ने गर्व से कहा।

'दादू, हम इस बीज-बम का क्या करेंगे? चिंकी कौतूहल से बोली।

'अब जब भी हम ट्रेन या बस से कहीं आएँ-जाएँ, बीजों की थैली अपने साथ रखें। बीज-बम को खिड़की से बाहर फेंकते जाएँ।' दादाजी ने बच्चों को 'बीज मंत्र' देते हुए कहा।

'वाह! यह तो बहुत ही आसान काम है, आम के आम, गुठलियों के भी दाम! यात्रा का आनंद और वृक्षारोपण का लाभ एक साथ!' चिंटू चहकते हुए बोला।

सभी बच्चों ने एक-दूसरे के हाथों पर हाथ रखा। धरती को बचाने और पेड़ लगाने का संकल्प लिया। वे समूह स्वर में बोले- 'बोएँगे बीज जहाँ-तहाँ, होगी हरियाली वहाँ-वहाँ।'

कन्हैया साहू अमित
कवि कुंज, परशुराम वार्ड, भाटापारा
जिला- बलौदाबाज़ार, छत्तीसगढ़

प्यारा तरबूज

गरमी के मौसम में पापा,
अक्सर ही तरबूज़ लाते।
मम्मी झट से धोकर काटे,
बड़े मजे से हैं सब खाते।।

यह फल बहुत रसीला होता,
होता इसका गूदा लाल।
खाने में यह मीठा लगता,
सचमुच यह फल करे कमाल।।

तरबूज़ लगे फुटबाल हमें,
जल की कमी करे यह दूर।
मिले विटामिन ए, बी अरु सी,
सेहत हो इससे भरपूर।।

घटता वज़न इसे खाने से,
आँखों को यह स्वस्थ बनाता।
देता है तरबूज़ फाइबर,
मिनरल भी है पाया जाता।।

खूब बिके गाँवों-शहरों में,
बच्चों का है प्यारा फल।
बच्चे, बड़े प्रेम से खाते,
जब भी गरमी करे विकल।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
मोहल्ला- बरगदवा (नई बस्ती), निकट-
गीता पब्लिक स्कूल
पोस्ट- मड़वा नगर (पुरानी बस्ती)
जिला- बस्ती 272 002 (उत्तर प्रदेश)

सूरज दादा

बहुत घमंडी हो गया,
देखो सूरज दादा।
रोज़ ही बढ़ता जा रहा,
तापमान इसका ज्यादा।
बिना आग और गैस के,
टंकी का पानी खौल रहा है।
छूने से उस पानी को,
हाथ हमारा जल रहा है।
ऐसी गर्मी जीवन में,
हमने कभी न देखी।

दिखा रहा है सूरज अब,
अपनी पूरी शेखी।
पेड़, पौधे और मानव,
सब जल रहे हैं धूप से।
अब तो डर लगने लगा है,
गर्मी के इस रूप से।

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'
गल्ला मंडी, गोला बाज़ार -273408
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

व्यावसायिक शिक्षा में बैंकिंग विषय का महत्त्व

मनजीत सिंह

व्यावसायिक शिक्षा वास्तव में एक कौशल विकास शिक्षा है और इसका उद्देश्य कौशल और ज्ञान का एक वांछित स्तर विकसित करना है। यह इस प्रकार रोज़गार का मार्ग प्रदान करता है। व्यावसायिक प्रशिक्षण छात्रों को स्वतंत्र होने के लिए और एक ही समय में, एक उत्पादक समुदाय बनाने का अवसर प्रदान करता है। 2025 तक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) में सभी छात्रों के 50% को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने की योजना है। कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) भारत में व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों के विकास और समन्वय के लिए नोडल मंत्रालय है। बेरोज़गारी की समस्या को हल करने के लिए तकनीकी शिक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण है। कुशल लोग बेरोज़गार नहीं हो सकते। यदि वे अपना खुद का व्यवसाय शुरू करते हैं, तो वे अन्य शिक्षित लोगों को नौकरी के अवसर प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा बेरोज़गारी की समस्या को कम करने में मदद करती है।

व्यावसायिक शिक्षा में बैंकिंग का महत्त्वः

व्यावसायिक शिक्षा में बैंकिंग का महत्त्व काफी अधिक है। बैंकिंग व्यवसाय और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह वित्तीय साक्षरता, वित्तीय प्रबंधन और व्यवसाय संचालन के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, यह छात्रों को निवेश और ऋण जैसे वित्तीय उत्पादों की बेहतर समझ विकसित करने में मदद करता है।

1. वित्तीय साक्षरताः

बैंकिंग के बारे में जानने से छात्रों को वित्तीय साक्षरता विकसित करने में मदद मिलती है, जिससे वे बचत, निवेश और ऋण जैसे वित्तीय उत्पादों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। आज के प्रतिस्पर्धा और तेजी से बढ़ती महँगाई के दौर में वित्तीय साक्षरता का हर युवा को स्कूली स्तर पर ज्ञान होना बेहद जरूरी हो गया है।

2. वित्तीय प्रबंधनः

बैंकिंग के अध्ययन से छात्रों को वित्तीय प्रबंधन कौशल विकसित करने में मदद मिलती है, जैसे बजट बनाना, खर्चों को ट्रैक करना, और ऋण का प्रबंधन करना।

3. व्यवसाय संचालनः

बैंकिंग व्यवसाय के लिए आवश्यक है, क्योंकि व्यवसाय को धन उधार लेने और जमा करने की आवश्यकता होती है। बैंकिंग के बारे में जानने से छात्रों को व्यवसाय संचालन के बारे में बेहतर समझ मिलती है, जैसे वित्तीय विवरणों का विश्लेषण करना, और वित्तीय जोखिमों का प्रबंधन करना। बैंकिंग कार्य के लिए बैंक से संबंधित विभिन्न शब्दावलियों का ज्ञान मिलता है। स्कूली स्तर पर यदि इस का ज्ञान हो जाता है तो बैंकिंग क्षेत्र में नौकरी करने में एवं खुद के व्यापार में काफी सुगमता रहती है।

4. निवेश और ऋणः

बैंकिंग के बारे में जानने से छात्रों को निवेश और ऋण जैसे वित्तीय उत्पादों की बेहतर समझ विकसित करने में मदद मिलती है, जिससे वे सूचित वित्तीय निर्णय ले सकते हैं।

5. रोज़गार के अवसरः

बैंकिंग में कई रोजगार के अवसर हैं, जैसे लिपिक, बैंक प्रबंधक, वित्तीय विश्लेषक, और ऋण अधिकारी। व्यावसायिक शिक्षा में बैंकिंग के अध्ययन से छात्रों को इन पदों के लिए तैयार होने में मदद मिलती है।

6. अर्थव्यवस्था के लिए योगदानः

बैंकिंग अर्थव्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह पूँजी निर्माण, ऋण और वित्तीय लेन-देन में मदद करता है। बैंकिंग के बारे में जानने से छात्रों को अर्थव्यवस्था के कामकाज के बारे में बेहतर समझ मिलती है।

7. सांस्कृतिक विविधताः

बैंकिंग एक व्यापक विषय है, जिसमें विभिन्न प्रकार के वित्तीय उत्पादों और सेवाओं को शामिल किया जाता है। बैंकिंग के बारे में जानने से छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों और अर्थव्यवस्थाओं के बारे में समझ विकसित करने में मदद मिलती है।

व्यावसायिक अध्यापक
बैंकिंग, वित्तीय सेवाएँ एवं इन्श्योरेंस
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
देसू जोधा, सिरसा, हरियाणा

डिजिटल तकनीक: कौशल शिक्षा में सफलता की कुंजी

कृष्ण मलिक

कौशल शिक्षा में डिजिटल तकनीक का उपयोग आज समय की आवश्यकता है। इससे न केवल विद्यार्थियों में रुचि उत्पन्न होती है, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। जब हम व्यवसायिक शिक्षा को डिजिटल तकनीकों से जोड़ते हैं तो इसका प्रभाव और भी व्यापक हो जाता है।

मैंने 2013 में ऑटोमोटिव विषय पढ़ाना शुरू किया। उसी समय मैंने यह सोचा कि क्यों न विद्यार्थियों के लिए एक ब्लॉगिंग वेबसाइट बनाई जाए, जिसमें विषय से संबंधित नोट्स उपलब्ध कराए जा सकें । हालांकि मेरी शैक्षिक पृष्ठभूमि कंप्यूटर साइंस की नहीं थी, लेकिन विद्यालय के समय में सीखी हुई एचटीएमएल भाषा और कोडिंग की बुनियादी जानकारी ने इसमें मेरी काफी मदद की। इसके बाद मैंने अपनी एक वेबसाइट 2015 में बनाई जिसका नाम eduhelpdeskguru.com रखा। प्रारंभ में संसाधनों की कमी के कारण इसका उपयोग सीमित रहा, लेकिन विद्यार्थियों की सकारात्मक प्रतिक्रिया से मुझे इस कार्य को निरंतर जारी रखने की प्रेरणा मिली।

धीरे-धीरे यह अनुभव हुआ कि केवल नोट्स डालने से विद्यार्थियों का पूर्ण रूप से मूल्यांकन संभव नहीं हो पा रहा है। तभी विचार आया कि क्यों न एक ऐसा प्लेटफॉर्म बनाया जाए, जहाँ विद्यार्थी स्वयं रजिस्ट्रेशन करके टेस्ट दे सकें। 2018 में मैंने अपने एक आईटी मित्र की सहायता से एक नई वेबसाइट बनवाई जिसका नाम digital-shikshadarpan.com रखा गया। यह वेबसाइट पूरी तरह मेरी निजी लागत से तैयार की गई। विद्यार्थियों को रजिस्ट्रेशन करने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो, इसके लिए एक यूट्यूब चैनल बनाया गया और वीडियो के माध्यम से मार्गदर्शन किया गया। यही वह बिंदु था जहाँ से डिजिटल शिक्षण की दिशा में मेरा वास्तविक सफर शुरू हुआ।

एनएसक्यूएफ की गतिविधियों के लिए भी मैंने वीडियो बनाकर अध्यापक साथियों को भेजने शुरू किए, जिससे उन्हें भी प्रेरणा और तकनीकी जानकारी प्राप्त हुई। इस प्रयास का सबसे बड़ा लाभ कोविड-19 काल में देखने को मिला। लॉकडाउन के समय पढ़ाई पूरी तरह से ऑनलाइन हो गई थी। अधिकांश अध्यापक व्हाट्सएप के माध्यम से होमवर्क भेजते थे, लेकिन विद्यार्थियों के पास सीमित स्टोरेज वाले मोबाइल थे, जिससे वे बार-बार डाटा डिलीट करने को मजबूर होते थे।

उस समय मेरी वेबसाइट विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हुई। अंबाला जिले के आईटी अध्यापक श्री जगमोहन सिंह जी ने आईटी विषय के नोट्स साझा किए और मैंने ऑटोमोबाइल विषय के। विद्यार्थियों को

अब केवल एक लिंक भेजनी होती थी और वे बिना किसी परेशानी के अध्ययन कर पाते थे। जब मैंने मॉक टेस्ट डालने शुरू किए तो विद्यार्थियों का रुझान और भी बढ़ा। विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2024 में इसका एंड्रॉइड ऐप भी बनवाया गया। अब विद्यार्थी अपने मोबाइल से ही टेस्ट दे सकते हैं और अध्यापक डिजिटल बोर्ड पर अभ्यास करवा सकते हैं। इस ऐप की विशेषता यह है कि इसमें विद्यार्थी के प्रदर्शन के अनुसार उन्हें 'क्वालिफाइड' या 'कंपीटेंट' का डिजिटल प्रमाण पत्र भी प्राप्त होता है।

आज लगभग 2000 विद्यार्थी इस मंच से जुड़ चुके हैं। खासकर मेवात जैसे पिछड़े क्षेत्रों के विद्यार्थियों की भागीदारी देखकर अत्यंत गर्व होता है। अब तक मैंने इस पहल पर लगभग एक लाख रुपये का व्यक्तिगत निवेश किया है, लेकिन जो आत्म संतोष विद्यार्थियों के हित में कार्य करने से प्राप्त होता है, वह अमूल्य है।

मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में डिजिटल तकनीक कौशल शिक्षा की रीढ़ बनेगी और सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी भी स्मार्ट लर्निंग के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की दिशा में कदम बढ़ाएँगे।

व्यावसायिक अध्यापक (ऑटोमोटिव)
राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रायपुररानी, पंचकूला

मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला

डॉ. मोनिका शर्मा

प्यारे बच्चो! जैसे ही आसमान में बादल गरजते हैं और बारिश की बूँदें ज़मीन को छूती हैं, कुछ जादू-सा होने लगता है और यह जादू सिर्फ़ बाहर ही नहीं, रसोई के अंदर भी होता है। तो चलो बच्चो, आज से शुरू करें मम्मी की रसोई में विज्ञान ढूँढना और बन जाएँ नन्हे वैज्ञानिक !

इस बार की कड़ी में बात करेंगे कि मानसून के मौसम में हमारी रसोई में कौन-कौन से अद्भुत परिवर्तन होते हैं, जो दिखते तो आम हैं, लेकिन उनमें छिपा है मज़ेदार विज्ञान।

1. नमी का असर- बिस्कुट क्यों हो जाते हैं नरम ?

क्या आपने कभी बारिश के मौसम में बिस्कुट को खुला छोड़ दिया है ? फिर देखा होगा कि वो कुरकुरे की जगह नरम और चबाने लायक हो जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मानसून में हवा में नमी (ह्यूमिडिटी) बहुत ज़्यादा होती है। बिस्कुट जैसे सूखे खाद्य पदार्थ हाइग्रोस्कोपिक होते हैं यानी ये हवा से नमी सोख लेते हैं। जैसे ही नमी इनके अंदर जाती है, उनकी कुरकुरी बनावट बदल जाती है। यह एक भौतिक परिवर्तन है यानी पदार्थ का रूप बदलता है, लेकिन उसका रासायनिक गुण वही रहता है।

2. बीजों का जागना- बारिश में क्यों उगने लगते हैं दाने ?

मम्मी जब मूँग या चने को रातभर पानी में भिगो कर रखती हैं, तो एक-दो दिन में उन पर छोटी-छोटी सफेद पूँछें आ जाती हैं। यह होता है अंकुरण (जरमिनेशन) जब बीज नमी और गर्मी के असर से जीवन की ओर पहला कदम बढ़ाते हैं। मानसून में नमी ज्यादा होती है, जिससे बीजों को उगने के लिए आदर्श माहौल मिल जाता है। यह एक जैविक परिवर्तन है बीज के अंदर मौजूद एंज़ाइम्स सक्रिय होकर उसका आकार और गुण दोनों बदल देते हैं।

3. फफूँदी का हमला -ब्रेड पर क्यों उभरते हैं हरे-नीले धब्बे ?

क्या कभी देखा है कि बारिश में ब्रेड या रोटियाँ जल्दी सड़ जाती हैं? उनपर हरे, काले या सफेद धब्बे उभर आते हैं? वह होती है फफूँदी (मोल्ड) एक प्रकार का फंगस। मानसून में नमी और गर्मी मिलकर फंगस के बीजाणुओं को सक्रिय कर देती है, जो खाने पर पनपने लगते हैं। ब्रेड या रोटी का स्टार्च फफूँदी के लिए खाना बन जाता है। यह रासायनिक और जैविक परिवर्तन है और इससे खाना अस्वास्थ्यकर हो जाता है। इसलिए खाने से पहले हमेशा ध्यान दें।

4. चावल क्यों बनते हैं चिपचिपे ?

मानसून में पकाए गए चावल अक्सर गीलेऔर चिपचिपे लगते हैं, क्यों ? चावल में होता है स्टार्च, जो पानी और नमी को जल्दी सोख लेता है। बारिश के मौसम में हवा में भी नमी ज़्यादा होती है, जिससे चावल अच्छे से सूख नहीं पाते। यह एक भौतिक परिवर्तन है। चावल का स्वाद वही रहता है, लेकिन बनावट बदल जाती है।

5. भाप का कमाल- रसोई में कैसे बनती है बादल जैसी हवा?

जब मम्मी चाय या खिचड़ी बना रही हों, तो देखा होगा कि बर्तन से सफेद भाप निकलती है, जैसे बादल उड़ रहे हों! यह होता है एवैपोरेशन और कंडेन्सेशन का खेल। पानी जब गर्म होता है, तो वो भाप बनकर उड़ता है और ठंडी हवा में फिर से बूँदों में बदल जाता है। मानसून में हवा नम होती है, इसलिए यह भाप और जल्दी नज़र आती है। यह भी भौतिक परिवर्तन है। पानी का रूप बदलता है, रासायनिक गुण नहीं।

6. नमक क्यों हो जाता है गीला ?

बारिश के मौसम में नमक की डिब्बी खोलते ही वह हाथ में चिपकने लगता है, क्योंकि नमक भी हाइग्रोस्कोपिक होता है। वह हवा की नमी सोख लेता है। मम्मी इसमें चावल के दाने डालती हैं, ताकि वे नमी सोख लें और नमक सूखा रहे। यह भी भौतिक परिवर्तन है। नमक का स्वाद वही रहता है, पर दाने गीले हो जाते हैं।

क्या सीखा हमने?

मानसून सिर्फ़ बारिश, मेंढक और इंद्रधनुष का मौसम नहीं है। यह विज्ञान की प्रयोगशाला है! नमी, गर्मी और भाप मिलकर रसोई को एक जादुई जगह बना देते हैं , जहाँ हर चीज़ में छिपा है कोई रासायनिक, भौतिक या जैविक परिवर्तन। तो अगली बार जब बारिश हो रही हो, तो रसोई की तरफ़ नज़र डालो और सोचो- यहाँ कौन-सा विज्ञान छुपा है?

अगली बार फिर मिलेंगे!

'शिक्षा सारथी' पत्रिका में **मम्मी की रसोईः मेरी प्रयोगशाला** की यह शृंखला आगे भी जारी रहेगी। अगले अंक में आप ऐसी ही कुछ और वैज्ञानिक अवधारणाओं से परिचित होंगे! तो जुड़े रहिए और खोजते रहिए रसोई के वैज्ञानिक रहस्य...बस यूँ ही पढ़ते रहिए अपनी चहेती पत्रिका 'शिक्षा सारथी'!

बीआरपी (साइंस)
मोरनी हिल्स, पंचकूला, हरियाणा

जब मास्टर जी ने मँगाया पिज़्ज़ा

गणित के एक शिक्षक घूमने गए। शाम के समय एक रेस्टोरेंट में पिज्ज़ा खाने चले गए। उन्होंने मैन्यू देखकर एक 9 इंच के पिज्ज़ा का ऑर्डर दे दिया। कुछ देर बाद वेटर 5-5 इंच के दो गोल पिज्ज़ा लेकर गुरुजी के सामने उपस्थित हुआ और कहा- सर! 9 इंच का पिज्ज़ा उपलब्ध नहीं है, इसलिए आपको 5-5 इंच के दो पिज्ज़ा दिए जा रहे हैं, जिससे कि आपको एक इंच पिज्ज़ा एक्स्ट्रा फ्री में मिल रहा है!

गणित शिक्षक जी ने बड़े प्यार से वेटर से रेस्टोरेंट के मालिक को बुलाने के लिए कहा। जब रेस्टोरेंट का मालिक आया, तो गुरुजी ने उससे बड़े प्यार से पूछा-आप कितने पढ़े हैं? मालिक ने कहा- सर, मैं पोस्ट ग्रेजुएट हूँ।

गुरुजी ने फिर पूछा- मैथ्स कहाँ तक पढ़ा है? मालिक ने कहा- सर, ग्रेजुएशन तक।

तब गुरुजी ने कहा- क्या आप मुझे बता सकते हैं कि गणित में एक सर्कल का क्षेत्रफल निकालने का क्या फॉर्मूला है?

मालिक ने कहा- सर πr^2

गुरुजी ने कहा- बिल्कुल ठीक। π =3.1416 और r होता है सर्कल का रेडियस। मैंने आपको 9 इंच डायामीटर के पिज्ज़ा का ऑर्डर दिया था, जिसका रेडियस होगा 4.5 इंच। इसलिए क्षेत्रफल होगा: $\pi \times (4.5)^2$ = 3.1416 × 20.25=63.62 स्क्वेयर इंच। क्या मैं सही हूँ?

मालिक ने कहा- जी, बिल्कुल सही हैं!

अब गुरुजी ने आगे कहा- आपने मुझे 5-5 इंच के दो पिज्ज़ा यह कहकर दिए हैं कि एक इंच फ्री मिल रहा है। अब आप 5 इंच के एक पिज्ज़ा का एरिया निकालिए। रेडियस होगा 2.5 इंच। एरिया = $\pi \times (2.5)^2$ = 3.1416 × 6.25=19.63 स्क्वेयर इंच। यानी दो पिज्ज़ा का कुल क्षेत्रफल = 2×19.63= 39.26 स्क्वेयर इंच।

अब गुरुजी ने कहा अगर आप मुझे 5 इंच का एक तीसरा पिज्ज़ा और भी देते हैं, तब भी मैं घाटे में ही रहूँगा, और आप कह रहे हैं कि मुझे एक इंच पिज्ज़ा फ्री दिया जा रहा है!

रेस्टोरेंट का मालिक निःशब्द... बेचारे से कोई उत्तर देते नहीं बना। अंत में उसने गुरुजी को 5-5 इंच के चार पिज्ज़े देकर अपनी जान छुड़ाई।

लेखक-अज्ञात

2025

जून- जुलाई माह के त्यौहार व विशेष दिवस

5 जून-	विश्व पर्यावरण दिवस
7 जून -	ईद-उल-ज़ुहा (बकरीद)
11 जून-	संत कबीर दास जयंती
14 जून-	विश्व रक्तदाता दिवस
15 जून-	पितृ दिवस
21 जून-	अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
4 जुलाई-	लखी शाह वंजारा जयंती
6 जुलाई-	मुहर्रम
7 जुलाई-	बाबा मखन शाह लबाना जयंती
11 जुलाई-	विश्व जनसंख्या दिवस
15 जुलाई-	कवि बाजे भगत जयंती
23 जुलाई-	लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जयंती
26 जुलाई-	कारगिल विजय दिवस
27 जुलाई-	हरियाली तीज

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Adolescent Issues

Ms. Rupam Jha

Traditional Authority has eroded with the passage of time, and with it has gone the emotional support it provided. The Charisma of Social Media and its subsequent allure is firm while society is in transit. I chanced upon viewing a series on OTT Platform, which went by the name "Adolescence". It dealt with how pre – teens and early teen years are stages of changes which the adolescent grapples with but is unable to deal with. The craving for unraveling the mysteries of adulthood too is there. Social media has replaced family and community.

There has always been a stigma attached to problems of the mind, "Mental Health" issues. Puberty brings about changes which the child is ill equipped to handle. Adolescents are seized with changes in their physical and mental make -up and are ill equipped to tackle them. Peer group face the same situation and though they may share with each other, a solution may not be found.

Mental health issues have been kept under wraps for long due to societal shame. A better approach is to actually deal with it. Celebrities have come out and spoken about their own mental health issues. This was a balm for the public as they realized that even the best of us have faced issues related to mental health.

Modern day to day living comes with its own set of problems, shrinking family sizes, culture of consumption and individualism. Somewhere along, our emotional wellbeing gets affected.

What is oft seen among Government school students, is that they have no one to talk to, to empathize with them. In the impressionable age, they are very much left to their own devices. Their parents are unable to understand the pressures of the Board Examination, correct stream of learning and the learner has to grasp with the outburst of hormones.

Body shaming, though reduced, still prevails. In pre –teen and early teen years. At this stage, the child is still very

conscious of appearance and wants to please the opposite gender. Acne, body hair and voice breaking occurs. In the series "Adolescent" the 13 year old protagonist feels that he is ugly and laments the fact.

What can be done to combat the situation? It is not possible to go back in time. But to have someone to talk to, to be able to express oneself freely preferably to a neutral person helps. A safe space should be created where the young minds won't be judged. Caregivers, parents, teachers can all contribute towards it. Adults are to stay calm and build a positive relationship with the adolescent.

Digital detox may not be practical. But too much of it does cause anxiety and social fright. Over time the young mind may become unstable and counselling will then be required. Impressionable minds are easy prey to substance abuse and the need to fit into the "Cool Dude" mood. Keeping up with the Jones is indeed not easy and materialism, maximalism hold a lot of charm.

There is also the charm of attraction but it comes with its set of challenges. Getting swayed easily too is an issue. In these times, digital influencers, distractions are many. Many a times, adults are unable to comprehend the colloquial terms used on the virtual platform.

Active listening by the adult is important. Only then will the listener be able to offer an empathetic ear. There is suddenly a burst of energy at this stage so it is important to channelize this towards something proactive and constructive. A hobby may be cultivated or a talent harnessed. Outdoor physical activity may find space in the chart of daily activities.

Adolescents are at an experimentative stage, defiant too. Secrets of friends are deeply guarded. So problem solving abilities should be developed by encouraging brain storming. This also helps in preventing lowering of selfesteem. Parents should encourage their wards to share problems such as bullying. If need be, professional should help be sought.

Various stakeholders can contribute towards creating a healthy environment. Schools can keep a positive ambience and have programs to educate students related to health and hygiene. The community can provide a correct value system in concurrence with the times and encourage open discussions about youth related issues.

Modernization is an often-misinterpreted word. A word meant to signify the adoption of a scientific outlook, making use of technology for progress and development is often confused with westernization. Aping the West, that to without context, leads to confusion of priorities.

Everyone goes through this transition from childhood to adulthood. A bit of support goes a long way as this phase passes. Join hands for a healthier living space.

Sr. Specialist
SCERT Haryana
Gurugram

Education in the New Context: Delving the Role of Play-Based Learning

Aarti Sharma

Early childhood education, recognized by the National Education Policy (NEP), spans from infancy to age eight, forming the crucial foundation for lifelong learning. Emphasizing a holistic and play-based approach, it acknowledges that children learn best through active engagement and exploration. NEP endorses holistic development, prioritizing cognitive, socio-emotional, physical, and creative growth over rote learning. Through play-based activities, children develop critical thinking, problem-solving, and social skills from an early age. NEP aims to establish a strong educational base for lifelong success, backed by research showing that quality early childhood education leads to academic excellence and positive social outcomes.

"Learning gives creativity, Creativity leads to thinking, Thinking leads to knowledge, Knowledge makes you great."

- A.P.J Abdul Kalam

Innovation in Learning Insights by Language and Learning Foundation

With reference to the National Curriculum Framework for School Education (NCF-FS), we have developed activities that prioritize enjoyment, spontaneity, and are driven by the child's interests. We aim to innovate various forms of play, such as imaginative play, constructive play, and socio-dramatic play. Through these play-based activities, children engage in hands-on experiences, experiment with ideas, and make sense of the world around them.

In line with this philosophy, we at LLF (Language and Learning

Foundation) have designed a curriculum aligned with the holistic development of the child. We have also developed instructional materials for teachers and student, named the Teacher's Guide, and Workbooks for students from Balvatika to 3rd class.

The workbook for children is structured based on the objectives, skills, and learning outcomes outlined in the National Curriculum Framework-FS (2022), ensuring consistency in observation. Emphasizing the importance of play, the workbook includes a range of enjoyable activities that foster active participation among children.

Almost every day, a small activity is provided in the workbook alignment with competencies, facilitating learning through discussions and utilization of classroom materials. Following these activities, additional exercises related to the content are provided.

We ensure coherence between the Teacher's Guide and the Workbook by emphasizing the regular execution of activities outlined in both resources. This ensures that children engage in daily exercises that promote Panch Kosha development of child - round skill development.

Additionally, we prepared tools for observation to understand children's comprehension and thought processes. By observing and discussing the work children have completed, we gain insights into their understanding and cognitive development. For children facing difficulties, remedial measures are provided, including extra time and focused practice sessions.

Part 2 of the workbook includes picture stories accompanied by activities on language and numeracy competencies, enhancing storytelling and comprehension skills. Part 3 offers activities for parents to engage in with their children at home, fostering family involvement in the learning process.

'Teaching Learning classroom practices'

LLF go through local language to school language in the classroom to make students comfortable. We begin with listening, speaking, oral and writing competencies, using familiar words, children's songs (baalgeet),

Testimonials from Parents and Teachers

When I used to come to school at various times, I observed teachers engaging in a variety of activities with the children. These activities ranged from singing songs, playing with toys, storytelling, to engaging in writing tasks. It was evident that the teachers kept the children actively involved in different activities.

Parent name -Bhuri Devi
Child name – Ashish
School name –G.P.S Khera , Kurukshetra

Nowadays, my child eagerly attends school every day. I've noticed remarkable progress as he has begun to recognize letters and numbers. Additionally, he can now identify his own name and enjoys sharing stories with his siblings. It's wonderful to see how children are encouraged to freely pursue their interests, whether it's through play, drawing, storytelling, or writing activities.

Parent name- Sweety Devi
Child name- Abhinav
School name - G.P.S Bibipur Shahbad, Kurukshetra

The reference material is commendable, featuring engaging activities that promote playfulness. Additionally, the Teaching-Learning Material (TLM) provided is suitable for the children's age group, further enhancing their learning experience.

Teacher's Name- Seema Shama
School Name – G.P.S Bhoresaidan, Kurukshetra

and small stories. Conversations are initiated through discussions of local scenes (by showing conversation charts). This approach promotes the holistic development of the child, including physical, social, emotional, and cognitive development. And writing skills starts drawing to letter writing encouraging them to make their favorite drawings. The classroom environment is print-rich and is updated every few weeks to match the students' learning levels. All learning materials are accessible for students to touch and use, ensuring they are appropriate for their level. Once oral competencies are developed, we start letter decoding with letters, choosing ones that form many meaningful and local words. Various interesting and engaging activities are used to introduce these letters to the students.

Furthermore, we provide a "Khel Pitara" (play kit) for each class, containing toys, puzzles, puppets, drawing materials, storybooks, and Geet /Kavita books. This facilitates alignment between activities and resources, enriching the joyful learning experience.

Moreover, LLF offers modules for capacity building of teachers, on effective implementation of learning pedagogy, promoting effective classroom practices and ensuring that Teachers Guide, workbooks are engaging and beneficial for children. We provide ongoing support to teachers, aiding in the effective implementation of aligned activities.

"We continue to innovate new methods of learning through research and the development of fresh content for children, in accordance with the National Curriculum Framework for Early Childhood Care and Education (NCF-FS)."

ECCE Specialist
LLF, Panchkula

Responsive Teaching Framework

Connecting Teacher with Individual Learner

Dr. Purnima

Introduction

Great teachers know the importance of establishing positive work relationship and develop nurturing classroom environment. They focus on individual student and create supportive connections with them. In a classroom, a teacher teaches the whole class, but students learn individually. Teachers often find it challenging to make slow-learners grasp the lesson and understand the concept in a fluid manner. Towards this goal, there is a specialized structure termed known as Responsive Teaching Framework that is a student-centered approach which integrates 21st century skills to education. It is based on three phases in teaching-Planning, Implementation and Evaluation. Across these three phases, it stands on eight reflective questions for teachers that make their teaching method connecting as well as engaging students with classroom. It relies of individual support to students, providing feedback and interaction with students about their academic and personal decisions. It is a skill that can transform academically reluctant students into good performing students.

Planning phase, Implementation phase and Evaluation phase makes this process comprehensive. There are eight reflective questions across the Responsive Teaching cycle (Figure 1).

Planning

At planning stage, teacher has to plan the choice of framework for teaching. He/She has to know his/her own strengths and well as areas that needs improvement. Also,the teacher need to know about the socio-economic as well as academic background of students. The reflective questions in planning phase are as under.

Q1. Which framework do I need to consider?

Depending on curriculum and school context, the teacher needs to choose the framework for teaching. The teacher may choose any teaching methodology viz. question quadrant, experiential learning, activity method, design-based teaching, interdisciplinary approach, technological interventions in the lesson.

Q2. What do I bring as a teacher?

A teacher is also an individual being having their own experience, skills and aptitude. The teachers' own experience and perspective deeply affects their teaching skills. He/She must reflect on his/her cultural competencies, learning and teaching experiences, strengths and teaching skills.

Q3. What do my students bring as learners?

To make teaching responsive, a teacher must be aware of the socio-cultural background of students and their motivation level. Since every student possesses different learning

Figure 1. Responsive Teaching Framework

interests, the teacher must fully acknowledge the individual differences and focus on their interest and aptitude. The teacher should know about-previous learnings of students, their achievements as well as learning difficulties they have faced earlier.

Implementation

After adequate planning, the next phase is implementation, in which a teacher needs to know about the topic to be taught and pedagogy of teaching that particular content. The teacher has to be mindful about individual skills and capacity of the learner and explore available resources at school. The teacher must reflect on-

Q4. What do I need to teach now?

The teacher should have knowledge about key concepts that need to be taught. He/She should integrate skills like collaboration, creativity, critical thinking and problem solving in the subject specific content.

Q5. How do I teach for all my students?

This is a reflective question that demands implementation of differentiated instruction methods. Interactive activities and group projects can be carried out by grouping of students depending on their learning levels.Hands-on practices, experimentation and technology integration in teaching can be beneficial for learning. Different needs of students and appropriate learning activities should be identified.

Evaluation

After the implementation of teaching-learning plan, one of the essential activities is to evaluate the learning outcomes of students. The teacher must know the learning level and provide constructive feedback to the learner with an outcome of further improvement. The teacher needs to reflect on his teaching skill and assess whether the desired goals have been achieved or not.

Q6. What did my student learn?

Learning outcomes of students must be assessed through formative assessment. It can be caried out through questionnaires, observation, as well as student self-reflection.

Q7. How do I give feedback to my students?

Feedback to student is an important component. Feedback to students should be constructive. In other words, feedback must be supportive to learning. Student feedback should be specific and actionable. The teacher should promptly celebrate student success and take action to support student weaknesses. Students must be told-How are they doing? What can be done for improvement?

Q8. How did my teaching help and support my students?

It is an important question that is for reflective practices on teaching methods. The teacher should get answer-How effective was teaching for the students? How will I engage my students more? What next activities can I add to my teaching?Teacher should reflect upon feedback from students and enhance teaching approach.

Conclusion

There is need for adopting the new teaching way in which every student gets personal attention and recognition. Responsive teaching has a great potential to achieve the success for slow-learners. They demonstrate high level of performance and persistence in their learning on getting positive support from teacher using responsive teaching.

Acknowledgement: ET Wing, SCERT Gurugram is acknowledged deeply for facilitating 21stcentury skill MOOC.

Lecturer Physics
DIET Mattarsham, Hisar

Jagannath Yatra: A Divine Journey of Devotion and Unity

The Jagannath Yatra, commonly referred to as the Rath Yatra, is one of the most grand and spiritually significant festivals in India. It is dedicated to Lord Jagannath, a form of Lord Krishna, and is celebrated with immense devotion, color, and fervor, primarily in Puri, a coastal town in the eastern state of Odisha. The Yatra is more than a religious procession—it is a symbol of cultural unity, equality, and the deep-rooted spiritual fabric of Indian society.

Historical and Religious Significance

The Jagannath Yatra has its roots in ancient Hindu scriptures and is believed to have been celebrated for over a thousand years. The term Jagannath translates to "Lord of the Universe," and the festival marks the annual journey of Lord Jagannath along with his siblings—Balabhadra (his elder brother) and Subhadra (his sister)—from their abode in the Jagannath Temple to the Gundicha Temple, located around 3 kilometers away.

According to Hindu mythology, the journey commemorates Lord Krishna's annual visit to his birthplace, Mathura, along with his siblings. The idols of the deities are placed on huge, ornately decorated wooden chariots or raths, which are pulled by thousands of devotees through the streets of Puri. The act of pulling the chariot is considered highly auspicious and is believed to bring spiritual merit and blessings.

The Sacred Deities and Chariots

The three deities involved in the Rath Yatra—Jagannath, Balabhadra, and Subhadra—are unique in form. Unlike traditional Hindu deities that are made of stone or metal, these idols are carved from wood and are ceremonially replaced every 12 to 19 years in a ritual called Navakalevara.

Each deity rides a separate chariot during the procession:

- Nandighosha is the chariot of Lord Jagannath. It is approximately 45 feet high and is supported by 16 wheels.
- Taladhwaja is the chariot of Lord Balabhadra. It stands about 44 feet

tall and has 14 wheels.

- Darpadalana (also known as Padmadhwaja) is the chariot of Subhadra. It is about 43 feet high and has 12 wheels.

The construction of these chariots begins on the auspicious day of Akshaya Tritiya, and they are built afresh each year using wood from specific trees such as neem, which are selected through sacred rituals.

Rituals and Procession

The Jagannath Yatra is held annually on the second day of the bright fortnight of Ashadha (June–July), according to the Hindu calendar. The festival spans around 9 to 10 days and consists of various rituals, the most prominent being:

Snana Yatra (Bathing Festival): Held a fortnight before the main event, this ritual involves bathing the deities with 108 pitchers of water. Post this ritual, the idols are believed to fall sick and are kept in seclusion (Anavasara) for recovery.

Pahandi Bije: The ritual of carrying the deities out of the sanctum sanctorum and placing them on the chariots is called Pahandi. It is a grand spectacle, accompanied by chanting, drums, and dancing.

Chhera Pahara: This unique tradition involves the Gajapati King of Puri sweeping the chariots with a golden broom and sprinkling sandalwood water. This signifies that in the eyes of God, all are equal, regardless of status or wealth.

Journey to Gundicha Temple: The deities are taken to the Gundicha Temple, considered the garden home of their aunt. They stay there for seven days, during which rituals and pujas continue.

Bahuda Yatra (Return Journey): After their stay, the deities return to the Jagannath Temple on the 9th day. The return journey is equally vibrant and significant.

Suna Besha: The final grand ritual involves adorning the deities with gold ornaments as they sit on their chariots. This event attracts massive crowds and marks the ceremonial conclusion of the Yatra.

Cultural and Social Impact

The Jagannath Yatra is a massive social and cultural event. It draws millions of devotees and tourists from across India and the world. It reflects the spirit of communal harmony, as people of all castes, creeds, and communities come together to participate and serve. In fact, during the Yatra, non-Hindus and foreigners, who are otherwise not allowed inside the temple, can have a darshan (viewing) of the deities.

This inclusivity makes the Yatra unique among Hindu festivals. It emphasizes that God belongs to all and that the spiritual path transcends human-made barriers.

Jagannath Yatra Around the World

While Puri remains the focal point of the Jagannath Yatra, the celebration has transcended geographical boundaries. With the spread of the International Society for Krishna Consciousness (ISKCON), Rath Yatras are now held in several major cities around the globe, including London, New York, Paris, Sydney, and Durban. These international processions, though smaller in scale, carry the same spiritual fervor and are instrumental in spreading the message of Lord Jagannath to a global audience.

Economic and Infrastructural Significance

The festival also has a tremendous impact on the local and state economy. Tourism surges during the Yatra season, benefiting thousands of vendors, artisans, transport providers, and hospitality services. The Odisha government and various organizations invest heavily in ensuring security, sanitation, healthcare, and transportation facilities to manage the enormous influx of pilgrims.

The event is also a logistical marvel. Coordinating the movement of millions of people, the construction of massive chariots, and the orchestration of daily rituals without interruption requires meticulous planning and execution.

Symbolism and Spiritual Lessons

The Jagannath Yatra is not merely a religious observance but a journey into deeper spiritual understanding. The chariot symbolizes the human body, and the journey represents the soul's progress towards self-realization. The act of pulling the chariot signifies the effort needed to pull one's mind toward righteousness, devotion, and the divine.

Moreover, the festival exemplifies impermanence and renewal—as seen in the periodic replacement of the deities' idols. It reminds devotees that even sacred forms undergo change and that the eternal spirit, not the physical form, is the true essence of divinity.

Conclusion

The Jagannath Yatra is a resplendent celebration of faith, culture, and humanity. It stands as a living tradition that continues to inspire millions with its grandeur and spiritual depth. In a world often divided by differences, the Yatra is a radiant example of unity, equality, and the timeless human desire to connect with the divine. Whether one pulls the chariot physically or emotionally, the journey of the Jagannath Yatra remains a transformative experience for all who witness or partake in it.

Sindhu Darshan Festival: Celebrating the Indus River and India's Cultural Unity

The Sindhu Darshan Festival is a unique cultural and spiritual celebration held every year in the scenic landscape of Leh, Ladakh, in the union territory of Ladakh, India. The festival pays homage to the Sindhu River (Indus River), which holds immense historical, cultural, and religious significance for India. Beyond its religious aspects, the festival also acts as a symbol of national integration, drawing people from different parts of the country to celebrate the idea of unity in diversity. Originating in the late 20th century, the Sindhu Darshan Festival has grown in scope and meaning, now standing as a representation of India's ancient legacy and contemporary communal harmony.

Historical and Cultural Significance of the Sindhu (Indus) River

The Sindhu River, known in the West as the Indus River, is among the most historically important rivers in the Indian subcontinent. It originates from the Mansarovar Lake in Tibet, flows through Ladakh, enters Pakistan, and finally drains into the Arabian Sea. The river is one of the longest rivers in the world, and it has been the cradle of one of the oldest civilizations—the Indus Valley Civilization. This ancient civilization flourished along its banks around 2500 BCE and gave rise to early urban planning, trade, and social structures.

The name "India" is derived from the word 'Indus', which itself is a Westernized version of 'Sindhu', the ancient Sanskrit name for the river. The Rigveda, one of the oldest texts in Indian literature, contains references to the Sindhu River, where it is praised for its might and divine nature. Throughout history, the river has been considered sacred and vital for sustenance, culture, and civilization.

Origins and Evolution of the Sindhu Darshan Festival

The Sindhu Darshan Festival was first conceptualized and initiated in 1997 by L.K. Advani, the then Home Minister of India, and journalist Tarun Vijay, as a means of honoring the ancient river and promoting national integration. The first event attracted 200 participants from various states of India. Since then, it has become an annual event held during June, coinciding with Guru Purnima or during the full moon day of that month.

The word 'Darshan' means to see or to pay respects, so the term 'Sindhu Darshan' literally translates to "seeing or paying homage to the Sindhu River." What began as a cultural-political initiative has gradually transformed into a vibrant festival involving religious rituals, cultural performances, and patriotic activities, all centered on the Sindhu River.

Key Rituals and Ceremonies

The festival opens with a symbolic ceremony in which participants from various states bring water from rivers of their respective regions. This water is then poured into the Sindhu River,

symbolizing unity in diversity and representing the convergence of all Indian rivers into one sacred stream. This ritual reinforces the idea of national integration, demonstrating that while India is home to many communities and cultures, all of them are unified through shared heritage and mutual respect.

The rituals often include:

- Puja (prayer) and Aarti on the riverbank, conducted by Hindu priests.
- Buddhist chants and rituals performed by monks, symbolizing Ladakh's deep Buddhist roots.
- Islamic and Christian prayers, showing the inclusive and secular nature of the event.

Participants and tourists can witness various folk dances, music performances, and traditional art forms from different Indian states. Cultural troupes present their regional traditions in a vibrant display of India's pluralistic heritage.

Venue and the Significance of Leh, Ladakh

Leh, the capital of the union territory of Ladakh, serves as the picturesque host for the Sindhu Darshan Festival. Set amidst majestic mountains and stark high-altitude landscapes, the banks of the Sindhu River in Shey Manla, about 8 kilometers from Leh, provide the perfect setting for a spiritual and cultural gathering.

Ladakh itself is a region rich in Tibetan Buddhist culture, and it has been historically significant for centuries as a crossroads of various civilizations. The peaceful coexistence of Buddhists, Muslims, and Christians

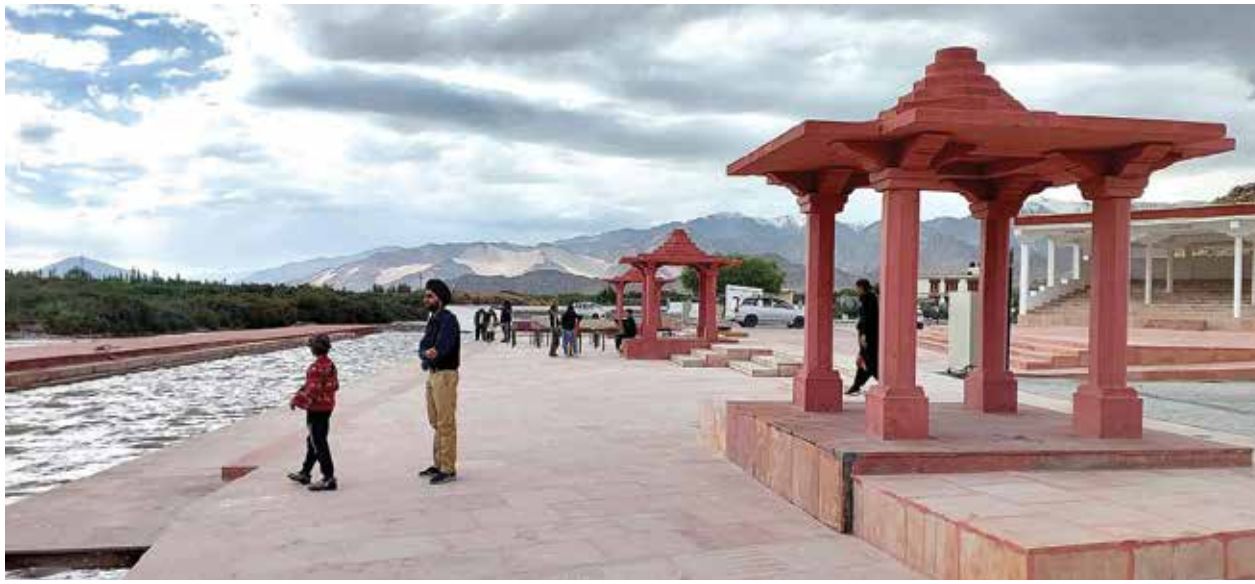

in this region adds another layer of depth to the festival, turning it into not just a religious event but a celebration of peace and communal harmony.

Tourism and Economic Impact

The Sindhu Darshan Festival has played a significant role in boosting tourism in Ladakh, particularly at the start of the tourist season in June. The event attracts thousands of tourists, both domestic and international, thereby giving a boost to the local economy. Hotels, guesthouses, restaurants, and local handicrafts markets benefit from the influx of visitors. Moreover, the festival promotes eco-friendly and cultural tourism, as many travelers are drawn to the spiritual and environmental values associated with the river.

In addition, it serves as a platform for artisans, performers, and cultural ambassadors from across India to showcase their crafts and traditions. This helps preserve folk arts and crafts, many of which are fading in other parts of the country.

National Integration and the Message of Unity

At its core, the Sindhu Darshan Festival aims to reconnect modern Indians with their roots. By celebrating the Sindhu River, the festival fosters a sense of shared identity, heritage, and history. The festival cuts across religious and regional boundaries, welcoming Hindus, Buddhists, Muslims, Christians, Sikhs, and others to collectively worship nature and celebrate unity.

The presence of people from various Indian states, each bringing water from their native rivers, is a symbolic gesture of unity. It reflects the ideal of "Ek Bharat, Shreshtha Bharat" (One India, Great India), where every community contributes to the national fabric.

Environmental Awareness and Challenges

While the Sindhu Darshan Festival is a celebration, it also serves as a platform to raise awareness about the ecological importance of rivers. The Sindhu River, like many others in the Indian subcontinent, faces threats from climate change, glacial retreat, and human encroachment. The festival includes initiatives like cleanliness drives, eco-awareness programs, and talks by environmentalists to emphasize the need for sustainable river management and ecological preservation.

However, increasing tourist footfall also raises concerns about environmental degradation. It is essential that organizers and participants remain mindful of maintaining cleanliness and respecting local ecosystems, especially in a fragile region like Ladakh.

Conclusion

The Sindhu Darshan Festival is more than just a cultural event—it is a spiritual, ecological, and patriotic expression of India's pluralistic identity. Celebrated on the banks of a river that has nourished civilizations for millennia, the festival is a living tribute to the rich historical, cultural, and ecological legacy of the Sindhu River. It connects the past with the present and unites people across religions, languages, and regions in a shared celebration of peace, harmony, and reverence for nature.

As India continues to modernize, festivals like Sindhu Darshan remind us of the timeless values of unity, coexistence, and respect for the natural world, all of which are central to the Indian ethos. By honoring the sacred Sindhu River, the festival honors the very essence of Indian civilization.

Amarnath Yatra: A Journey of Faith, Devotion, and Endurance

The Amarnath Yatra is one of the most revered and spiritually significant pilgrimages in Hinduism. It is an annual journey undertaken by thousands of devotees to the Amarnath Cave, located in the Himalayan region of Jammu and Kashmir, India. Dedicated to Lord Shiva, the cave is famous for the natural formation of an ice lingam, believed to be a physical manifestation of the deity. The pilgrimage is not just a religious ritual but also a testament to human faith, endurance, and the deep spiritual connection that millions of people have with the divine.

Historical and Mythological Background

The origins of the Amarnath Yatra are deeply embedded in Hindu mythology. According to legend, it was in this very cave that Lord Shiva revealed the secrets of immortality and creation to his consort Parvati. To ensure that no living being overheard the sacred Amar Katha (the tale of immortality), Shiva left behind all living companions — even his bull Nandi, the moon from his hair, and the five elements. He chose the remote cave of Amarnath for its seclusion.

It is said that a pair of doves, who overheard the divine conversation, became immortal and can still be seen in the area. The story captures the essence of the pilgrimage — the search for eternal truth and the willingness to forsake all worldly ties in pursuit of divine knowledge.

Geographic and Spiritual Significance

The Amarnath Cave is located at an altitude of about 3,888 meters (12,756 feet) above sea level, surrounded by snow-clad mountains and accessible only during the summer months, typically from late June to August, when the weather conditions allow safe passage. The highlight of the cave is the naturally formed Shiva lingam made of ice, which waxes and wanes with the phases of the moon. This phenomenon is viewed as a divine occurrence, enhancing the spiritual mystique of the site.

The Amarnath Yatra is considered one of the Char Dham Yatras (the four sacred Hindu pilgrimages) of the Himalayas. Undertaking this journey is believed to cleanse the soul, bring divine blessings, and aid in achieving moksha (liberation from the cycle.

Guru Purnima: A Celebration of Wisdom and Guidance

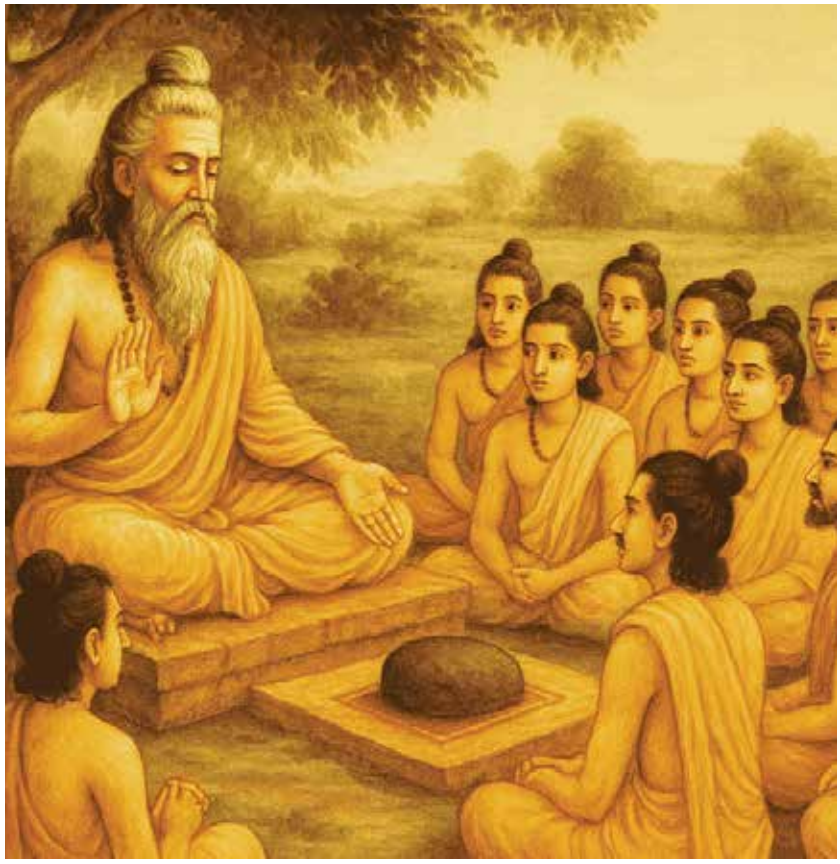

Introduction

Guru Purnima is a deeply revered festival celebrated in India and several other parts of Asia to honor and pay homage to teachers, mentors, and spiritual guides. Rooted in ancient tradition and philosophy, Guru Purnima transcends religious boundaries and speaks to the universal value of learning and guidance. Celebrated on the full moon day (Purnima) in the Hindu month of Ashadha (June–July), this festival recognizes the pivotal role played by the Guru — a Sanskrit word meaning "the remover of darkness" — in shaping the lives of individuals and communities.

Historical and Mythological Origins

The origins of Guru Purnima can be traced back to ancient Hindu scriptures. One of the earliest references is found in the Vedas, where the guru is held in the highest esteem, equated with God. The festival is traditionally believed to mark the birth anniversary of Ved Vyasa, the author of the Mahabharata and compiler of the Vedas and Puranas. Ved Vyasa is considered one of the greatest gurus in Indian tradition, and thus, this day is also known as Vyasa Purnima.

In Buddhist tradition, Guru Purnima holds equal significance. It commemorates the day when Lord Buddha gave his first sermon at Sarnath to his five disciples after attaining enlightenment. This event marked the foundation of the Buddhist monastic order, and the teachings of Buddha as a "Guru" have inspired millions over centuries.

Jainism also acknowledges this day, marking the occasion when Lord Mahavira, the 24th Tirthankara, made Gautam Swami his first disciple, beginning the tradition of spiritual teachers in Jain monastic life.

Spiritual and Philosophical Significance

In Indian culture, a Guru is not merely a teacher of academics but a spiritual guide who leads the disciple from ignorance to enlightenment. The word "Guru" is derived from "Gu" meaning darkness, and "Ru" meaning remover — thus, a guru is someone who dispels the darkness of ignorance. The relationship between a Guru and disciple is sacred and based on trust, respect, and dedication.

Guru Purnima is a time for introspection, renewal of spiritual goals, and recommitment to the path of self-realization. Many spiritual aspirants observe fasts, offer prayers, and participate in satsangs (spiritual discourses) on this day. It is also a time when devotees pay their respects to spiritual leaders, visit ashrams, and engage in selfless service.

Rituals and Observances

The rituals of Guru Purnima vary across different regions and communities but share a common thread of reverence and devotion. In Hindu households and temples, devotees perform pujas (worship rituals) dedicated to their gurus. Offerings such as flowers, fruits, sweets, and traditional garments are

presented to living gurus or symbolic representations of past teachers.

In educational institutions, Guru Purnima is often marked by special programs where students honor their teachers through speeches, cultural performances, and gifts. In ashrams and spiritual centers, disciples gather to listen to discourses from their spiritual leaders, meditate, and reflect on the teachings they have received.

In many parts of India, especially among farmers, Guru Purnima also marks the beginning of the monsoon season and the start of the academic year, symbolizing a new cycle of growth and learning.

Modern-Day Relevance

While Guru Purnima is steeped in spiritual tradition, its relevance in the modern world is profound. In an era dominated by information, technology, and rapid change, the role of a true teacher — someone who imparts wisdom, ethics, and clarity — is more crucial than ever. The festival serves as a reminder that education is not merely about acquiring knowledge but about transforming lives.

In today's context, the concept of a guru extends beyond religious or spiritual mentors. It includes parents, teachers, counselors, coaches, and even colleagues — anyone who plays a guiding role in shaping a person's path. The values of gratitude, humility, and lifelong learning promoted on Guru Purnima are essential for personal growth and social harmony.

Furthermore, the celebration of Guru Purnima fosters intergenerational dialogue and respect. It bridges the gap between traditional wisdom and modern aspirations by recognizing that true progress is rooted in knowledge that nurtures both the mind and the spirit.

Celebrations Across Religions and Cultures

In Hinduism, Guru Purnima is widely celebrated in temples and homes with pujas and spiritual discussions. In many mathas (spiritual institutions), special events are organized where

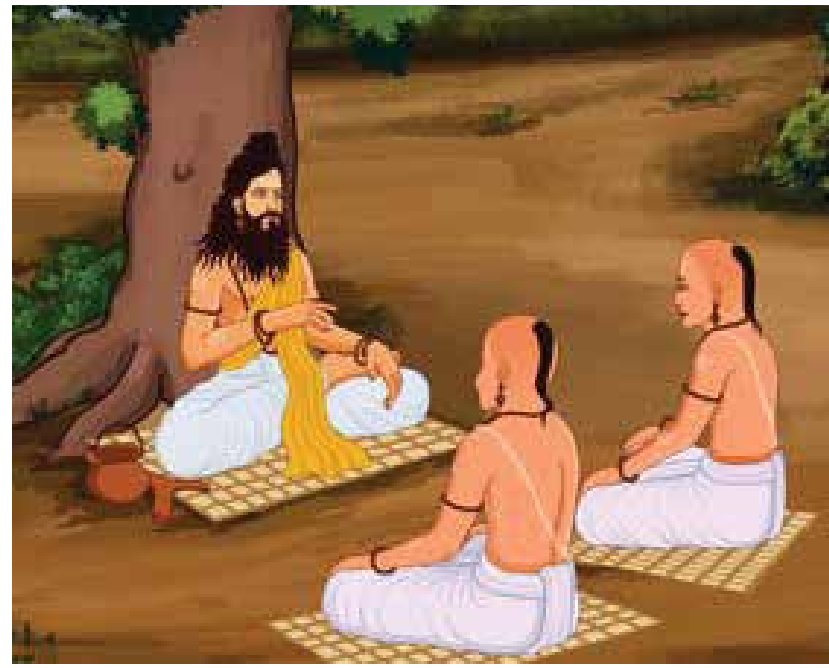

disciples reaffirm their vows and seek blessings from their gurus.

In Buddhism, particularly among followers of the Theravada tradition in countries like Sri Lanka, Thailand, and Myanmar, Guru Purnima is a solemn day of reflection, observed with meditation, chanting, and visits to monasteries.

In Jain communities, the festival is a time to remember the teachings of the Tirthankaras and the importance of a spiritual teacher in achieving liberation.

Even in the secular world, many educational institutions and yoga centers now observe Guru Purnima as a day to honor teachers and mentors, reflecting the festival's growing appeal beyond religious boundaries.

The Role of Guru in Indian Thought

The central role of the guru in Indian philosophy cannot be overstated. Texts like the Bhagavad Gita, Upanishads, and Guru Gita emphasize the necessity of a teacher for understanding the deeper truths of life. Lord Krishna, acting as Arjuna's guru in the Gita, exemplifies the transformative power of right guidance.

The Guru-Shishya Parampara (teacher-disciple tradition) has been the cornerstone of Indian knowledge systems for centuries, whether in music, dance, art, yoga, or spirituality. This parampara ensures the preservation and transmission of complex ideas and values through generations, highlighting the importance of experiential and holistic learning.

Conclusion

Guru Purnima is not just a festival; it is a timeless expression of reverence for the forces that illuminate our path. In an increasingly fragmented world, the celebration of this day offers an opportunity to reconnect with the essence of learning — rooted in respect, discipline, and gratitude. Whether one sees the Guru as a spiritual guide, a life coach, a parent, or an academic teacher, the principles behind Guru Purnima inspire a deeper appreciation for those who guide us. As society continues to evolve, the values celebrated on Guru Purnima remain a vital compass. By honoring our gurus — past and present — we not only express gratitude but also commit to becoming better students of life, ready to share our light with others in return.

Kargil Vijay Diwas: A Tribute to Valor and Sacrifice

Introduction

Kargil Vijay Diwas is observed annually on 26th July in India to commemorate the victory of the Indian Armed Forces over Pakistan in the Kargil War of 1999. It is a day of pride, remembrance, and tribute to the bravery, determination, and sacrifice of the Indian soldiers who fought to safeguard the nation's sovereignty. The day marks the successful completion of Operation Vijay, a mission undertaken to reclaim the Indian territories occupied by Pakistani intruders in the Kargil sector of Jammu and Kashmir.

This war and the subsequent victory not only demonstrated India's military strength but also united the country in honoring its real heroes — the soldiers who fought in one of the toughest terrains on Earth.

Background of the Kargil War

The Kargil War was fought between India and Pakistan from May to July 1999 in the Kargil district of Jammu and Kashmir, and along the Line of Control (LoC). The conflict began when Pakistani soldiers, along with militants, infiltrated Indian territory and occupied strategic peaks and positions in the Dras, Kargil, Batalik, and Tololing sectors.

The incursion was a strategic move by the Pakistani military to cut off the link between Kashmir and Ladakh and to force the Indian Army to withdraw from the Siachen Glacier. This would have given Pakistan the upper hand in future negotiations regarding Kashmir.

The intrusion was discovered by Indian shepherds in the Batalik sector, and soon, the Indian Army launched a massive military operation to push the infiltrators back. What followed was a high-altitude warfare, fought in treacherous terrain at altitudes of 16,000–18,000 feet, where the thin air and freezing temperatures posed serious challenges to both sides.

Operation Vijay: India's Strategic Response

India responded with Operation Vijay, a large-scale military operation involving around 200,000 troops. The Indian Air Force also launched Operation Safed Sagar to support the ground troops by conducting aerial strikes on enemy positions.

Despite the harsh terrain and the tactical advantage held by the intruders, the Indian forces launched a series of coordinated attacks to reclaim the occupied peaks. Among the most significant battles were those fought at Tololing, Tiger Hill, Point 4875 (Batra Top), and Dras, where Indian soldiers displayed exceptional courage.

The operation lasted for over two months, and by 26th July 1999, India had successfully evicted the infiltrators and reclaimed all its posts. Over 500 Indian soldiers laid down their lives during the operation, and their sacrifice is what Kargil Vijay Diwas commemorates.

Heroes of the Kargil War

Several soldiers emerged as national heroes during the Kargil conflict. Their stories of bravery continue to inspire millions.

- Captain Vikram Batra, known for his famous words "Yeh Dil Maange

More", played a pivotal role in the capture of Point 4875. He was posthumously awarded the Param Vir Chakra, India's highest military honor.

- Grenadier Yogendra Singh Yadav, who scaled a vertical cliff under heavy fire to help capture Tiger Hill, was severely injured but continued fighting. He also received the Param Vir Chakra.
- Rifleman Sanjay Kumar, who displayed extraordinary bravery while neutralizing enemy bunkers at Point 4875, was another recipient of the Param Vir Chakra.
- Lieutenant Manoj Kumar Pandey, who led his platoon under intense enemy fire and captured crucial positions, was posthumously honored with the Param Vir Chakra.

These brave soldiers, among many others, symbolize the highest ideals of courage and sacrifice.

Significance of Kargil Vijay Diwas

Kargil Vijay Diwas is more than just a celebration of military victory. It is a symbol of national unity, pride, and patriotism. The day reminds us of the high cost of freedom and the immense dedication of those who protect our borders.

It is also a day of reflection and gratitude — to honor the martyrs and support the families who lost their loved ones. The observance reinforces the commitment of the Indian Armed Forces and the nation toward preserving peace and security.

In a geopolitical context, the Kargil War exposed the duplicity of Pakistan, which had claimed non-involvement in the conflict. However, later evidence, including identities of Pakistani soldiers killed in action, proved otherwise. The war also reaffirmed India's resolve to defend its sovereignty at any cost.

Commemorations and Celebrations

Every year on 26th July, various events are held across the country to mark Kargil Vijay Diwas:

At the Kargil War Memorial in Dras, located in the foothills of the Tololing Hill, senior military officers, families of martyrs, and citizens gather to pay homage. The memorial, built by the Indian Army, has inscriptions of the names of all soldiers who laid down their lives.

- Candlelight marches, patriotic programs, and essay competitions are organized in schools and colleges to educate the younger generation about the significance of the day.
- Military parades, band performances, and tribute ceremonies are held at army headquarters and regimental centers.
- Social media campaigns and documentary screenings are also popular methods of spreading awareness about the war and its heroes.

Lessons from Kargil

The Kargil conflict taught India many valuable lessons, both militarily and diplomatically:

Surveillance and Intelligence: The war highlighted the importance of strong surveillance and timely intelligence. The Indian defense forces have since upgraded their capabilities in these areas significantly.

Military Preparedness: The need for better-equipped forces in high-altitude warfare led to modernization and procurement of advanced equipment.

International Diplomacy: India handled the situation diplomatically by garnering international support and exposing Pakistan's aggression. This enhanced India's image globally as a responsible democracy.

Civic Awareness: The war also stirred national consciousness, leading to greater public appreciation of the armed forces.

Conclusion

Kargil Vijay Diwas is not just a date in the calendar — it is a reminder of unmatched courage, unwavering patriotism, and supreme sacrifice. It is a day that binds the nation together in remembering the gallant soldiers who wrote a golden chapter in India's military history.

As we salute the brave hearts who gave their today for our tomorrow, it becomes our responsibility as citizens to honor their legacy, support our armed forces, and contribute to the peace and progress of the nation. Let us ensure that the spirit of Kargil — of resilience, bravery, and unity — continues to inspire generations to come.

Jai Hind!

आदरणीय संपादक महोदय!

सादर नमस्कार।

'शिक्षासारथी' का गतांक पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। यह अंक न केवल सामग्री की दृष्टि से समृद्ध था, अपितु शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं शैक्षणिक नीतिनिर्धारकों के लिए भी अत्यंत प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। कक्षा तत्परता कार्यक्रम के अंतर्गत आनंदपूर्ण, अर्थपूर्ण व समावेशी शिक्षण की दिशा में प्रस्तुत प्रभावी कदमों को पढ़कर यह अनुभूति हुई कि हम सही मार्ग पर अग्रसर हैं। एससीईआरटी हरियाणा द्वारा विद्यालयी शिक्षा में तकनीकी नवाचारों की दिशा में किए जा रहे कार्य प्रशंसनीय हैं। अनुनाद पहाड़े प्रतियोगिता जैसे नवाचारी प्रयास गणित को जीवन से जोड़ने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। यह बच्चों में तर्कशक्ति और रचनात्मकता को बढ़ाने का सशक्त माध्यम है। विद्यांजलि कार्यक्रम के माध्यम से सामुदायिक सहभागिता को जिस रूप में बढ़ावा दिया जा रहा है, वह शिक्षा-व्यवस्था को सशक्त करने में मील का पत्थर साबित हो सकता है।

भोपाल की शैक्षणिक यात्रा का वर्णन पढ़कर यह ज्ञात हुआ कि शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं, अपितु इतिहास, संस्कृति व सामाजिक संदर्भों से जुड़कर व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है। बलाना विद्यालय की परिवर्तन यात्रा प्रेरक थी।'बालसारथी', तथा 'खेल-खेल में विज्ञान' और'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' जैसे स्थायी स्तंभ बच्चों की जिज्ञासा और सहभागिता को बढ़ाने में सक्षम हैं।

आपकी पूरी संपादकीय टीम इस पत्रिका के लिए साधुवाद की पात्र है।आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इस प्रकार की प्रेरणादायक एवं उपयोगी सामग्री हमें प्राप्त होती रहेगी।

संजीव कुमार
सहायक
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय!

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का मई 2025 अंक आज पढ़ने को मिला। पत्रिका इतनी प्रिय हो गई है कि अब हर महीने इसका इंतज़ार रहने लगा है। संपादकीय, लेख, कविताएँ और कहानियाँ पढ़कर मन को सच्चा सुकून मिलता है। पत्रिका का द्विभाषी स्वरूप हिन्दी और अंग्रेज़ी -दोनों भाषाओं का रसास्वादन कराता है, जो अत्यंत सराहनीय है। मैं 'शिक्षा सारथी' हेतु लंबे समय से रचनाएँ प्रेषित कर रहा हूँ, किंतु अब तक मेरी किसी रचना को प्रकाशित नहीं किया गया है। फिर भी, आपके प्रति विश्वास और सृजनात्मक अनुराग के साथ आज पुनः अपनी एक कहानी एवं एक कविता भेज रहा हूँ। कृपया उन्हें विचारार्थ स्वीकार करें।

सादर

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'
गल्ला मंडी, गोलाबाज़ार
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश- 273408

योग भगाए रोग

महर्षि पतंजलि ने किया काम महान,
योग का दिया विश्व को ज्ञान।
योग सिद्धांतों को योगसूत्र में पिरोया,
तभी तो योग का जनक वो कहलाया।

योग करने के हैं अनेक फ़ायदे,
शरीर, मन और आध्यात्मिक स्तर के।
चाहे हो बच्चा, बूढ़ा या जवान,
योग है सबके लिए वरदान।

विद्यार्थी जो योग अपनाते,
लक्ष्य की राह सहज ही पाते।
योग शरीर में लचीलापन लाए,
रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाए।

योग ध्यान और एकाग्रता सिखाए,
मन को शांत, तनावमुक्त बनाए।

जीवन में उत्साह, उमंग जगाए,
आत्मबल, आत्मविश्वास बढ़ाए।

तन स्वस्थ, मन निर्मल हो जाए,
ध्यान से बुद्धि प्रखर बन जाए।
योग से जीवन सुंदर बन जाए,
हर विद्यार्थी सफलता को पाए।

विद्या और योग जब साथ चलें,
जीवन की राहें सहज लगें।
जो योग को जीवन में अपनाए,
हर सपने को सच कर जाए।

- चीनू अग्रवाल, गणित अध्यापिका
शहीद सूबेदार बलबीर सिंह राजकीय उच्च विद्यालय
दप्पर, एसएएस नगर (मोहाली), पंजाब

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ

मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

हैं फूल रोकते, काँटे मुझे चलाते
मरुस्थल, पहाड़ चलने की चाह बढ़ाते
सच कहता हूँ जब मुश्किलें नहीं होती हैं
मेरे पग तब चलने में भी शर्माते
मेरे संग चलने लगें हवाएँ
तुम पथ के कण-कण को तूफ़ान करो।
मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

अंगार अधर पे धर मैं मुस्काया हूँ
मैं मरघट से ज़िंदगी बुला के लाया हूँ
हूँ आँख मिचौनी खेल चला किस्मत से
सौ बार मृत्यु के गले चूम आया हूँ
है नहीं स्वीकार दया अपनी भी
तुम मत मुझ पर कोई एहसान करो।
मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

श्रम के जल से राह सदा सिंचती है
गति की मशाल आँधी में ही हँसती है
शोलों से ही शृंगार पथिक का होता है
मंज़िल की माँग लहू से ही सजती है
पग में गति आती है, छाले छिलने से
तुम पग-पग पर जलती चट्टान धरो।
मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

फूलों से जग आसान नहीं होता है
रुकने से पग गतिवान नहीं होता है
अवरोध नहीं तो संभव नहीं प्रगति भी
है नाश जहाँ निर्माण वहीं होता है
मैं बसा सकूँ नव स्वर्ग धरा पर जिससे
तुम मेरी हर बस्ती वीरान करो।
मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

मैं पंथी तूफ़ानों में राह बनाता
मेरा दुनिया से केवल इतना नाता
वह मुझे रोकती है अवरोध बिछाकर
मैं ठोकर उसे लगाकर बढ़ता जाता
मैं ठुकरा सकूँ तुम्हें भी हँसकर जिससे
तुम मेरा मन मानस पाषाण करो।
मैं तूफ़ानों में चलने का आदी हूँ
तुम मत मेरी मंज़िल आसान करो।

- गोपालदास 'नीरज'

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114